पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

# मातृवन्दना

माघ-फाल्गुन, कलियुगाब्द 5117, फरवरी, 2016

## दृढ़ इच्छाशक्ति से ही हो सकता है आतंकवाद का खात्मा

# एसजेवीएन विश्व पटल पर

## भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भूटान में 600 मेगावाट की जल विद्युत परियोजना का शिलान्यास किया गया

**2014-15 में विद्युत उत्पादन क्षमता में 460 मेगावाट की वृद्धि**

- हिमाचल प्रदेश में 412 मेगावाट की रामपुर जल विद्युत परियोजना
- महाराष्ट्र में 47.6 मेगावाट की खिरवीरे पवन ऊर्जा परियोजना

- हिमाचल प्रदेश में देश का सबसे बड़ा भूमिगत 1500 मेगावाट जलविद्युत स्टेशन।
- वित्तीय वर्ष 2011-12 के दौरान 7610 मिलियन यूनिट तथा वित्तीय वर्ष 2013-14 के दौरान 7183 मिलियन यूनिट का रिकार्ड विद्युत उत्पादन।
- एकल राज्य से राष्ट्रीय निगम के रूप में विस्तार एवं राष्ट्र की सीमा से बाहर उपस्थिति।
- ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों, पवन, ताप एवं सौर क्षेत्र में प्रवेश।
- विद्युत ट्रांसमिशन एवं परियोजना परामर्श तथा परामर्शक सेवाएं।
- एनजेएचपीएस को वित्तीय वर्ष 2010-11 के दौरान 'बेहतरीन निष्पादन' के लिए 'गोल्ड शील्ड' पुरस्कार।
- विभिन्न राज्यों एवं पड़ोसी देशों में 13 जलविद्युत परियोजनाओं का निर्माण।

**एसजेवीएन लिमिटेड**
**SJVN Limited**
(A joint Venture of Govt of India & Govt. of Himachal Pradesh)
A Mini Ratna & Schedule 'A' PSU **www.sjvn.nic.in**

SHARAD/07/2014

निर्माणाधीन परियोजनाएं: 588 मेगावाट लूहरी, 66 मेगावाट धौलासिद्ध (हिमाचल प्रदेश); 252 मेगावाट देवसारी, 60 मेगावाट नैटवार मोरी, 51 मेगावाट जाखोल सांकरी (उत्तराखण्ड); 900 मेगावाट अरुण- III (नेपाल); 600 मेगावाट खोलोंग्चू, 570 मेगावाट वांग्चू (भूटान); 378 मेगावाट कामेंग- I, 60 मेगावाट रंगानदी-II, 80 मेगावाट दोईमुख स्टेज II एवं सी-रिवर बेसिन (अरुणाचल प्रदेश); 1320 मेगावाट बक्सर ताप विद्युत (बिहार);

ॐ वाक्देवय्यी चः विद्धमहे,
विरिन्जि पत्नियी चः धीमहि,
तन्नों वाणि प्रचोदयात्।

*स्वर और ज्ञान की देवी, जो प्रजापति ब्रह्मा की पत्नी हैं जिन्होंने मुझे ज्ञान व वाणी दी है उनको मेरा नमस्कार है।*


वर्ष : 15 अंक : 6

# मातृवन्दना

माघ-फाल्गुन, कलियुगाब्द
5117, फरवरी, 2016

**सम्पादक**
डॉ. दयानन्द शर्मा

**सम्पादक मण्डल**
दलेल सिंह ठाकुर
जय सिंह ठाकुर

**प्रबन्धक**
महीधर प्रसाद

**वार्षिक शुल्क**
**100 रुपये**

**कार्यालय**
**मातृवन्दना**
**डॉ. हेडगेवार भवन,**
**नाभा हाउस**
**शिमला-171 004**
**दूरभाष : 0177-2836990**
**e-mail:**
**www.matrivandana.org**
**matrivandanashimla@gmail.com**

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
**सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**
**वैधानिक सूचना :** पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।


## *सुरक्षाबल एवं सेना के वीर जवानों को दाद देनी चाहिए*

*भारत तो कई दशकों से आतंकवाद को झेल रहा है। विगत मास ही पठानकोट के आर्मी एयरबेस में छः आतंकवादियों का घुस जाना न केवल उनकी उग्रता एवं निर्भयता को दर्शाता है अपितु हमारे देश की सुरक्षा एजेंसियों की भयानक चूक को भी प्रदर्शित करता है। यह तो हमारे सुरक्षाबल एवं सेना के वीर जवानों को दाद देनी चाहिए कि उन्होंने अपना जीवन दांव पर लगाकर आर्मी एयरबेस को भारी नुकसान होने से बचा लिया। स्वयं सेना के अधिकारी एवं जवानों ने अपने प्राणों की आहुति देकर आतंकवादियों को उनके छिपने के ठिकानों से बाहर निकाल कर गोलियों से भून डाला। भारत में यह आतंकवाद पूर्व से ही पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित माना जाता रहा है। इस घुसपैठ मे भी पाकिस्तानी आतंकवादियों का ही हाथ था, जिसके सबूत पाकिस्तानी सरकार को सौंप दिए गए हैं।*❖


| | | |
|---|---|---|
| सम्पादकीय | शत्रु को मुंहतोड़ जवाब | 3 |
| प्रेरक प्रसंग | राजा और महात्मा | 4 |
| चिंतन | पुरातन भारतीय संस्कृति के अद्भुत केन्द्र तपोवन | 5 |
| आवरण | सेना की वर्दी की आड़ में 'पाक-आतंकवादी' | 6 |
| संगठनम् | शिव-शक्ति संगम पुणे | 10 |
| पुण्य जयंती | भक्ति एवं कर्म के उपासक -संत रविदास | 12 |
| देश-प्रदेश | बंगलुरु में बन रहा स्पेस पार्क | 13 |
| देवभूमि | चंबा में हिन्दू संगठनों ने | 15 |
| कृषि | पूरा साल करें पालक की खेती | 17 |
| घूमती कलम | तिरुपति मंदिर देगा 5.5 टन सोना | 18 |
| काव्य-जगत | देव व देवलू | 20 |
| संस्कृतम् | संस्कृतं वदाम | 21 |
| स्वास्थ्य | कैसे करें दांतों तथा मसूड़ों की उचित सुरक्षा | 22 |
| विश्व-दर्शन | फोर्ब्स की सूची में चमके भारतीय | 23 |
| प्रतिक्रिया | जो हुआ अच्छा हुआ | 24 |
| पुण्य-स्मरण | राष्ट्र समर्पित इतिहास पुरुष : ठाकुर राम सिंह | 25 |
| महिला जगत | विद्या की देवी भगवती सरस्वती | 27 |
| दृष्टि | शौर्य की साईकिल देगी एसी जैसी ठंडी हवा | 28 |
| समसामयिकी | मदरसे में राष्ट्रगान गाने पर मौलानाओं ने शिक्षक को पीटा | 29 |
| बाल जगत | फौजी पिता का बहादुर बेटा | 31 |

## पाठकों के पत्र

महोदय

किसी भी प्रकार का आतंकवाद जो कहीं भी आश्रय लिए होता है वह सम्पूर्ण मानवता के खिलाफ है। आज दुनिया का शायद ही कोई ऐसा देश हो जो इससे अछूता रहा हो। जैश-ए-मोहम्मद और आईएसआईएस इसका नया रूप हैं। यह भी सच है कि विश्व के तमाम बड़े देश और संयुक्त राष्ट्र संघ भी आतंकवाद को स्पष्ट शब्दों में परिभाषित नहीं कर पाया है। यदि ऐसा होता तो यूरोपीय देशों, भारत और सीरिया जैसे देशों में इंसानियत का खून न होता और इन मानवता के दुश्मनो के समर्थन में स्वर न उठते। आज भारतीय नेतृत्व ने आतंकवाद के विषय को जिस दृढ़ता से विश्व समुदाय के सामने रखा है वह काबिले तारीफ है। लेकिन इतने भर से काम नहीं चलने वाला। भारत आजादी के पश्चात् से ही इसका भुक्तभोगी रहा है । संयुक्त राष्ट्र में भी आतंकवाद के खिलाफ एक मत बनाए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए भारत के पास अच्छा अवसर है कि विश्व मंच पर आतंकवाद को पनाह देने वाले देशों को भी बेनकाब करे।❖

*जोगिन्द्र ठाकुर, भल्याणी, कुल्लू*

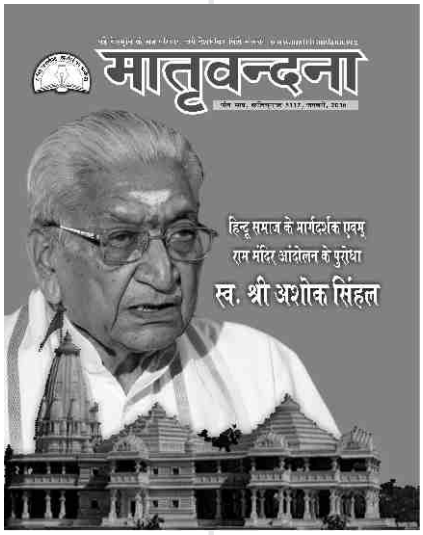


सम्पादक महोदय

उम्दा मासिक पत्रिका मातृवन्दना के मुख पृष्ठ पर पढ़ा जैविक खेती, गो-पालन व अस्पृश्यता निवारण की अनूठी पहल तथा संबंधित बांके छायाचित्रों सहित राज्यपाल आचार्य देवव्रत का फोटो और हां इसी बीच सुन्दर रंगबिरंगी छपाई में छपा है नशा मुक्ति अभियान। बहुत अच्छा लगा दिसम्बर 2015 का मातृवन्दना अंक, जिसके शीर्ष पर छपा रहता है पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार। संपादकीय में जैविक खेती, नशामुक्ति एवं अस्पृश्यता उन्मूलन हेतु अनूठी पहल के तहत आपने यह ठीक लिखा है कि प्रदेश के वर्तमान राज्यपाल एक ऐसी ही विभूति हैं जिन्होंने सामाजिक उन्नति के लिए अनेक कार्य किए हैं। यह हमारा सौभाग्य है किसी राज्यपाल ने हटकर कार्य किए हैं। ऐसे प्रयत्नों से ही समाज का नई दिशा की ओर अग्रसर होना संभव है और इसके लिए गो-संरक्षण, नशामुक्ति एवं अस्पृश्यता निवारण माध्यम बने। मगर अस्पृश्यता खासतौर पर अपना सर अक्सर उठाती रहती है। पिछले दिनों की ही बात ले लीजिए महामहिम जी अग्निकांड प्रभावित गांव कोटला (कुल्लू) दर्द बांटने गए, वहीं सब समुदाय को साथ बिठाकर छुआछूत मिटाने की बात कर खाना खाया। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है- 'मतलब में दोस्त खूब दुम हिलाते हैं नजर उधर मगर हाथ हमसे मिलाते हैं।' छुआछूत मिटाने के लिए राज्यपाल जी ने एक मिसाल प्रस्तुत की है। क्या सब समुदाय भारतीयता का परिचय देते हुए आपस में ऊंच-नीच का भेद नहीं मिटा सकते हैं। अभी तक कई स्कूलों में बच्चों को अलग-अलग पंक्तियों में भोजन (दोपहर का भोजन) खिलाया जाता है। ऐसी बातों को लेकर अनगिनत भाषण और चर्चाएं आदि हो चुकी हैं मगर परिणाम की गति आज भले ही थोड़ी धीमी है लेकिन आगे भविष्य में कोई करिश्मा अवश्य ही बदलाव लाएगा।❖

*भीम सिंह, सुंदरनगर( हि.प्र )*


## मातृवन्दना पत्रिका में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं

**सम्पर्क करें**

**प्रबंधक,**
**मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन,**
**नाभा हाऊस, शिमला-171004 ( हि.प्र. )**
**दूरभाष- 0177-2836990**


## स्मरणीय दिवस (फरवरी)

| | |
|---|---|
| *एकादशी* | *4, 18 फरवरी* |
| *बसंत पंचमी* | *12 फरवरी* |
| *वीर हकीकत राय बलिदान दिवस* | *12 फरवरी* |
| *गुरू गोलवलकर जयंती* | *19 फरवरी* |
| *पूर्णिमा* | *22 फरवरी* |
| *संत रविदास जयंती* | *25 फरवरी* |

# शत्रु को मुंहतोड़ जबाब देने के लिए एकजुट होना ज़रूरी

विश्व के कुछ देश आज पूर्णतया आतंकवाद की चपेट में आ चुके हैं। ऐसा कोई दुर्लभ देश होगा जो आतंकवादी घटनाओं से ग्रसित नहीं है। एशियाई ही नहीं अपितु अमेरिकी एवं पश्चिमी देश भी आतंकवादियों की नापाक हरकतों से बुरी तरह पस्त हो चुके हैं। भारत तो कई दशकों से आतंकवाद को झेल रहा है। विगत मास ही पठानकोट के आर्मी एयरबेस में छः आतंकवादियों का घुस जाना न केवल उनकी उग्रता एवं निर्भयता को दर्शाता है अपितु हमारे देश की सुरक्षा एजेंसियों की भयानक चूक को भी प्रदर्शित करता है। यह तो हमारे सुरक्षाबल एवं सेना के वीर जवानों को दाद देनी चाहिए कि उन्होंने अपना जीवन दांव पर लगाकर आर्मी एयरबेस को भारी नुकसान होने से बचा लिया। स्वयं सेना के अधिकारी एवं जवानों ने अपने प्राणों की आहुति देकर आतंकवादियों को उनके छिपने के ठिकानों से बाहर निकाल कर गोलियों से भून डाला। भारत में यह आतंकवाद पूर्व से ही पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित माना जाता रहा है। इस घुसपैठ मे भी पाकिस्तानी आतंकवादियों का ही हाथ था, जिसके सबूत पाकिस्तानी सरकार को सौंप दिए गए हैं। पाकिस्तान सरकार सम्भवतः स्वयं भी अपने देश में आतंकवादी घटनाओं से थक हार चुकी है और भारत से अपने रिश्ते सुधारना चाहती है। कश्मीर का पेच, सेना पर प्रभुत्व की कमी, आईएसआई का बिखरा जाल, आतंक के बीज स्वयं बोने, उन्हें प्रशिक्षण देने और उन्हें शरण देने जैसे कारणों से वह सरकार कठोर कदम उठाने में असहाय दिखती है। किन्तु प्रधानमंत्री द्वारा स्वयं पाकिस्तान जाकर वहां के प्रधानमंत्री से मिलने और शांति प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की ईमानदारी से जुड़ी पहल से मजबूरन पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने भी पहली बार आतंकवादी संगठन जैश के ठिकानों पर छापे डाले हैं और पर्याप्त संख्या में आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है। देखना यह है कि नवाज शरीफ आने वाले समय में कोई ठोस कार्रवाई कर पाते हैं या जिहादी साथ वाली फिरका परस्त ताकतों के दबाव में आकर चुप बैठ जाते हैं। विशेष धर्म की जिहादी सोच ने आतंकवाद और दहशत का एक ऐसा साम्राज्य स्थापित कर दिया है जिसकी जड़ें सर्वत्र फैलती नजर आ रही हैं। आईएसआई (इस्लामिक स्टेट) के दुष्कृत्यों से न केवल अन्य धर्म-समुदाय को मानने वाले लोग हानि उठा रहे हैं अपितु उनके वर्चस्व को स्वीकार न करने वाले उसी धर्म के लोगों को भी उनके अत्याचार और आतंक का ग्रास बनना पड़ रहा है। इस जिहादी सोच का प्रतिकार इसी धर्म के धर्मगुरूओं द्वारा किया जा सकता है। उन्हें खुल कर धर्म की मूल भावना जो अहिंसा पर आधारित है, उस पर युवा पीढ़ी का ध्यान केंद्रित करवाना होगा तथा भय और आतंक के माहौल से दूर रहने के लिए उन्हें सद्विचारों से प्रेरित करना होगा। इस बात से भी आगाह करना होगा कि चंद उग्र विचारों एवं राक्षसी वृत्ति वाले आतंकवादी सरगनाओं के कारण विश्व में जो पूर्ण समुदाय के प्रति नफरत की आग फैल रही है, उसमें निरपराध और शांति प्रिय जन समुदाय कहीं झुलस न जाए।

# राजा और महात्मा

यदि कोई काम एकाग्र मन से किया जाए तो उसमें सफलता निश्चित है। इस सफलता से आपको कोई भी नहीं रोक सकता। एक राजा बहुत बड़ा प्रजापालक था, हमेशा प्रजा के हित में प्रयत्नशील रहता था। वह इतना कर्मठ था कि अपना सुख, ऐशो-आराम सब छोड़कर सारा समय जन-कल्याण में ही लगा देता था। यहाँ तक कि जो मोक्ष का साधन है अर्थात् भगवत-भजन, उसके लिए भी वह समय नहीं निकाल पाता था। सुबह राजा वन की ओर भ्रमण करने के लिए जा रहा था कि उसे एक देव के दर्शन हुए, राजा ने देव को प्रणाम करते हुए उनका अभिनन्दन किया और देव के हाथों में एक लम्बी-चौड़ी पुस्तक देखकर उनसे पूछा- 'महाराज, आपके हाथ में यह क्या है?'

देव बोले- 'राजन! यह हमारा बहीखाता है, जिसमे सभी भजन करने वालों के नाम है।' राजा ने निराशायुक्त भाव से कहा- 'कृपया देखिये तो इस किताब में कहीं मेरा नाम भी है या नहीं?' देव महाराज किताब का एक-एक पृष्ठ उलटने लगे, परन्तु राजा का नाम कहीं भी नजर नहीं आया। राजा ने देव को चिंतित देखकर कहा- 'महाराज! आप चिंतित ना हों, आपके ढूंढने में कोई भी कमी नहीं है। वास्तव में ये मेरा दुर्भाग्य है कि मैं भजन-कीर्तन के लिए समय नहीं निकाल पाता, और इसीलिए मेरा नाम यहाँ नहीं है।' उस दिन राजा के मन में आत्म-ग्लानि-सी उत्पन्न हुई लेकिन इसके बावजूद उन्होंने इसे नजर-अंदाज कर दिया और पुन: परोपकार की भावना लिए दूसरों की सेवा करने में लग गए।

कुछ दिन बाद राजा फिर सुबह वन की ओर टहलने के लिए निकले तो उन्हें वही देव महाराज के दर्शन हुए, इस बार भी उनके हाथ में एक पुस्तक थी। इस पुस्तक के रंग और आकार में बहुत भेद था, और यह पहली वाली से काफी छोटी भी थी। राजा ने फिर उन्हें प्रणाम करते हुए पूछा- 'महाराज ! आज कौन सा बहीखाता आपने हाथों में लिया हुआ है? देव ने कहा- 'राजन! आज के बहीखाते में उन लोगों का नाम लिखा है जो ईश्वर को सबसे अधिक प्रिय हैं !' राजा ने कहा- 'कितने भाग्यशाली होंगे वे लोग? निश्चित ही वे दिन रात भगवत-भजन में लीन रहते होंगे !! क्या इस पुस्तक में कोई मेरे राज्य का भी नागरिक है।' देव महाराज ने बहीखाता खोला, और ये क्या, पहले पन्ने पर पहला नाम राजा का ही था।

राजा ने आश्चर्यचकित होकर पूछा- 'महाराज, मेरा नाम इसमें कैसे लिखा हुआ है, मैं तो मंदिर भी कभी-कभार ही जाता हूँ ?' देव ने कहा- 'राजन! इसमें आश्चर्य की क्या बात है?जो लोग निष्काम होकर संसार की सेवा करते हैं, जो लोग संसार के उपकार में अपना जीवन अर्पण करते हैं, जो लोग मुक्ति का लोभ भी त्यागकर प्रभु की निर्बल संतानों की सेवा-सहायता में अपना योगदान देते हैं, उन त्यागी महापुरुषों का भजन स्वयं ईश्वर करता है। हे राजन! तू मत पछता कि तू पूजा-पाठ नहीं करता, लोगों की सेवा कर तू असल में भगवान की ही पूजा करता है। परोपकार और नि:स्वार्थ लोकसेवा किसी भी उपासना से बढ़कर है। देव ने वेदों का उदाहरण देते हुए कहा- 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छनं समा: एवान्त्वाप नान्यतोअस्ति व कर्म लिप्यते नरा:..' अर्थात् 'कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करो तो कर्मबंधन में लिप्त हो जाओगे' राजन! भगवान दीनदयालु हैं। उन्हें खुशामद नहीं भाती बल्कि आचरण भाता है.. सच्ची भक्ति तो यही है कि परोपकार करो, दीन-दुखियों का हित-साधन करो। अनाथ, विधवा, किसान व निर्धन आज अत्याचारियों से सताए जाते हैं इनकी यथाशक्ति सहायता और सेवा करो और यही परम भक्ति है।'

राजा को आज देव के माध्यम से बहुत बड़ा ज्ञान मिल चुका था और अब राजा भी समझ गया कि परोपकार से बड़ा कुछ भी नहीं और जो परोपकार करते हैं वही भगवान के सबसे प्रिय होते हैं।❖

## आन के लिए

प्राध्यापक जगदीशचंद्र बसु लंदन विश्वविद्यालय से विज्ञान-स्नातक होकर भारत लौटे और यहां आते ही कलकत्ता के प्रेसिडेन्सी कॉलेज में विज्ञान के प्राध्यापक के पद पर उनकी नियुक्ति हो गई। उन दिनों महाविद्यालयों के अधिकांश प्राध्यापक अंग्रेज ही हुआ करते थे। बंगाल का शिक्षा-संचालक भी अंग्रेज था। अंग्रेजों की तुलना में भारतीय प्राध्यापकों को कम वेतन दिया जाता था। आचार्य बसु ने इस अन्याय का विरोध करते हुए कहा- ''मैं वेतन लूंगा तो पूरा, अन्यथा वेतन ही नहीं लूंगा।'' पूरे तीन वर्ष तक उन्होंने वेतन लिया ही नहीं। वेतन न लेने के कारण आर्थिक तंगी हो गई। कलकत्ते का महंगा मकान छोड़कर नगर से बाहर, दूर एक सस्ता मकान लिया। कलकत्ता आने-जाने के लिए वे नाव से हुगली पार करते और नाव स्वयं खेकर उस पार जाते, उनकी पत्नी नाव वापस ले आती। किन्तु इन सारे कष्टों के बाद भी उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा। अन्त में विरोधियों ने घुटने टेके। उन्हें अंग्रेजों के बराबर वेतन देना अधिकारियों ने स्वीकार किया और नए वेतनमान के अनुसार पूरे तीन वर्ष का वेतन उन्हें दिया गया।

❖ साभार: जीवन दीप

# पुरातन भारतीय संस्कृति के अद्भुत केन्द्र तपोवन

यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि पश्चिम में जिस अरण्य अर्थात जंगल को असभ्यता की निशानी माना जाता है और जिसके कानून को बर्बरता का पर्यायवाची माना जाता है, वही जंगल हमारे देश भारतवर्ष में संस्कृति के अद्भुत केन्द्र रहे हैं। जंगलों में बनाए गये कानूनों अर्थात् स्मृति ग्रन्थों से भारतीय समाज आज भी प्रेरणा व मूल्य बोध प्राप्त करता रहा है। पुरातन भारतीय ग्रन्थों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जंगलों को जीवन के मंगल से भर देने के उद्देश्य से देश के ज्ञान-विज्ञान, आध्यात्म-संस्कृति की प्रवाहिका नाड़ियों को अनवरत स्पन्दित रखने हेतु साधनापूर्ण जीवन जीते हुए समाज के सर्वांगीण विकास की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पुरातन गौरवमयी भारतवर्ष में जंगलों में भी संस्कृति और सभ्यता का प्रसार कर लिया गया था और प्राचीन काल में हमारे देश भारतवर्ष में अत्यन्त विकसित अरण्य अर्थात् वन संस्कृति स्थापित हो चुकी थी। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण में ही उल्लेखित दण्डकारण्य नामक अरण्य अर्थात वन, कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास कृत महाभारत में उल्लेखित खाण्डववन, जहां पर बाद में इन्द्रप्रस्थ की स्थापना हुई, विभिन्न पुरातन ग्रन्थों में उल्लेखित दण्डकारण्य, नैमिष्यारण्य आदि वन्यखण्डों से पुरातन भारतवर्ष में अरण्य अर्थात् वनों की महत्ता का पता चलता है। वनों की इसी श्रृंखला में नैमिष्यारण्य का भी नाम आता है जहां सूतजी के नेतृत्व में शौनक आदि सहस्त्रों ऋषि-मुनियों ने एक लम्बा ऐतिहासिक संवाद किया था। यह ऐतिहासिक सत्य है कि पुरातन काल में भारतवर्ष में तपोवनों का जाल बिछा हुआ था और ये तपोवन तपस्या करने के स्थान हुआ करते थे।

आश्रम और तपोवन को कुछ उदाहरणों से आसानी से समझा जा सकता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीताजी गर्भिणी अवस्था में ही राजमहल से वन में चले जाने पर वाल्मीकि मुनि के आश्रम यानी तपोवन में ही सहारा मिला था जहां उन्हें लव-कुश नामक दो पुत्र हुए और उन्हें अस्त्र-शस्त्र की उस काल की अत्याधुनिक शिक्षा भी वहीं तपोवन में मिली। जिन याज्ञवल्क्य को राजा जनक की सभा में सोना मढ़ी सींगों वाली हजार गायें प्राप्त हुई थीं, वे महान याज्ञवल्क्य भी अपनी दो पत्नियों कात्यायनी और मैत्रेयी सहित आश्रम में ही रहा करते थे और उनकी गायें भी वहीं पर थीं। श्रीराम वन गमन प्रकरण में श्रीराम को वनवास के समय अत्रि मुनि के तपोवन में जाने का अवसर प्राप्त हुआ था, वे अत्रि मुनि दण्डकारण्य के एक आश्रम में ही निवास किया करते थे जहां उनकी पत्नी अनुसूया ने सीता माता को सोने के गहनों से लाद दिया था। महाभारत की कथा के अनुसार हस्तिनापुर तत्कालीन प्रतिष्ठान के एक पुरुवंशी सम्राट दुष्यन्त का विश्वामित्र व मेनका की सन्तान शकुन्तला नामक ऋषिकन्या से पहले प्रेम हुआ था और फिर विवाह भी हो गया था, वह विश्वामित्र व मेनका की सन्तान शकुन्तला कण्व ऋषि के आश्रम में ही निवास करती थी। श्रीकृष्ण और बलराम ने जिन संदीपनि मुनि से शिक्षा ग्रहण की थी वे संदीपनि मुनि अपने तपोवन में ही रहा करते थे। प्राचीन काल में धौम्य ऋषि के आश्रम में आरुणि पढ़ा करते थे। आरुणि ने एक रात मूसलाधार बारिश के पानी को आश्रम में प्रवेश करने से रोकने के लिए खुद को रात भर मेढ़ पर लिटाए रखा और आरुणि के इस कठिन कर्म से प्रभावित होकर आचार्य धौम्य ने उनका नाम रख दिया था, उद्यालक आरुणि यानी उद्धारक आरुणि। पुरातन ग्रन्थों के इन उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि तपोवन अर्थात आश्रम सामाजिक व्यवस्था में किस प्रकार गहराई से जुड़े हुए थे।

इनसे इस तथ्य की भी पुष्टि होती है कि पुरातन भारतवर्ष के प्राय: सभी वनों में तपोवन हुआ करते थे और तपोवनों में विद्याकुल। ऋषि-मुनि गहन वनों में कुटी छवाकर रहते थे। जहां वे ध्यान और तपस्या के साथ ही वानप्रस्थी और प्राचार्य के रूप में जीवन व्यतीत करते थे। इन्हें ही आश्रम अर्थात् तपोवन कहा जाता था। उस जगह पर समाज के लोग अपने बालकों को वेदाध्ययन के अतिरिक्त अन्य विद्याएं सीखने के लिए भेजते थे। इन विद्याकुलों में

..... शेष पृष्ठ 28 पर

# सेना की वर्दी की आड़ में 'पाक आतंकवादी' कर रहे भारत में खून-खराबा

पठानकोट में भारतीय सेना की वर्दी पहने पाक समर्थित आतंकवादियों द्वारा किए गए हमले के बाद एक बार फिर आतंकवादी कार्रवाइयों में भारत के विरूद्ध भारतीय सेना की वर्दी के इस्तेमाल का खुलासा हुआ है। इससे पहले भी अनेक बार सीमा पार से आए आतंकवादी भारतीय वर्दी की आड़ में भारत में बड़े पैमाने पर खून-खराबा कर चुके हैं जिसके चंद उदाहरण निम्न हैं:

* 26 सितम्बर सन् 2013 को भारतीय सेना की वर्दी में आए आतंकवादियों ने जम्मू में हीरानगर स्थित पुलिस थाने व साम्बा में सेना के कैम्प पर हमला करके 5 सिपाहियों, 3 सैनिकों और 2 नागरिकों को शहीद कर दिया।
* 19 मार्च सन् 2015 को जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले में एक पुलिस चौकी पर हमला करके 3 लोगों की जान ले ली।
* 27 जुलाई सन् 2015 को भी भारतीय सैनिकों की वर्दी पहने पाक आतंकियों ने दीनानगर में पुलिस चौकी पर हमला करके कम से कम 7 लोगों को मार डाला।

2 जनवरी सन् 2016 को भी भारतीय सैन्य वर्दी में ही आए पाक आतंकवादियों ने पठानकोट स्थित एयरबेस पर हमला करके एक लैफ्टीनैंट कर्नल सहित 7 सुरक्षा कर्मियों को शहीद कर दिया।

भारतीय सेना और सैनिकों के प्रति देशवासियों के मन में अत्यधिक सम्मान और विश्वास है इसलिए आतंकवादी भारतीय सैन्य वर्दी पहन कर आसानी से लोगों को धोखा देने व सैन्य शिविरों तक पहुंच कर अपने नापाक इरादों को अंजाम देने में सफल हो जाते हैं। इस कदर रणनीतिक महत्व की होने के बावजूद भारतीय सेना की वर्दी एक 'आम-सी' वस्तु बन कर रह गई है जिसे जो चाहे खरीद सकता है। देश में सैनिकों की वर्दियां, उनके जूते, बैल्ट तथा उनसे संबंधित अन्य वस्तु आम-लोगों को भी आसानी से मिल जाती है। सरकारी तौर पर इनकी बिक्री के लिए कुछ निर्धारित नियम हैं परन्तु इनका पालन नहीं किया जाता। पंजाब के छावनी क्षेत्रों व सीमांत गांवों में ऐसी वर्दियां खुलेआम बिक रही हैं जबकि पठानकोट में अनेक दुकानदार खरीददारों से उनकी पहचान मांगे बिना उन्हें ये वर्दियां बेचते पाए गए हैं।

***भारतीय सेना और सैनिकों के प्रति देशवासियों के मन में अत्यधिक सम्मान और विश्वास है इसलिए आतंकवादी भारतीय सैन्य वर्दी पहन कर आसानी से लोगों को धोखा देने व सैन्य शिविरों तक पहुंच कर अपने नापाक इरादों को अंजाम देने में सफल हो जाते हैं। इस कदर रणनीतिक महत्व की होने के बावजूद भारतीय सेना की वर्दी एक 'आम-सी' वस्तु बन कर रह गई है जिसे जो चाहे खरीद सकता है। देश में सैनिकों की वर्दियां, उनके जूते, बैल्ट तथा उनसे संबंधित अन्य वस्तु आम- लोगों को भी आसानी से मिल जाती हैं। सरकारी तौर पर इनकी बिक्री के लिए कुछ निर्धारित नियम हैं परन्तु इनका पालन नहीं किया जाता। पंजाब के छावनी क्षेत्रों व सीमांत गांवों में ऐसी वर्दियां खुलेआम बिक रही हैं जबकि पठानकोट में अनेक दुकानदार खरीददारों से उनकी पहचान मांगे बिना उन्हें ये वर्दियां बेचते पाए गए हैं।***

वहां रेलवे रोड़ की अनेक दुकानों पर 200-300 रुपए प्रति मीटर तक सैनिक वर्दी का कपड़ा उपलब्ध है। एक औसत वयस्क की वर्दी पर लगभग 5 मीटर कपड़ा लगता है और 500 रूपए सिलाई के देकर आसानी से सैनिक वर्दी बनवाई जा सकती है। एक सेनाधिकारी ने स्वीकार किया कि जब भी वे लोग वर्दी खरीदने जाते हैं तो उनसे पात्रता संबंधी कोई पहचान पत्र आदि नहीं मांगा जाता। भटिंडा छावनी के निकट बीबीवाला में भी ऐसी ही स्थिति मिली। हालांकि कई दुकानदारों ने सेना की वर्दी बेचने के परमिट ले रखे हैं परन्तु अधिकांश दुकानदार वर्दी बेचते समय

ग्राहक से पहचान पत्र नहीं मांगते। जब एक फर्जी ग्राहक भेज कर इन बातों की सत्यता जांचने की कोशिश की गई तो दुकानदार उससे पहचान पत्र मांगे बिना ही उसे वर्दी बेचने को तैयार हो गया। इस इलाके में भारतीय सेना के 'लोगो' सहित सेना की शर्ट 400 रूपए में व 'भारतीय सेना' लिखी टोपी 50 रूपए में बिक रही थी। लुधियाना जिले में सैन्य वर्दी से मिलते-जुलते जूतों और कपड़ों की बिक्री पर प्रतिबंध के बावजूद इनकी बिक्री बेरोकटोक जारी है और इस बात की कोई गारंटी नहीं कि इनका इस्तेमाल गलत कार्यों के लिए नहीं होता होगा। इस बारे में कर्नल जगदीश सिंह बराड़ (रि.) का कहना है कि, ''सरकार बाजारों में हर ऐरे-गैरे को इन वर्दियों की बिक्री का मामला बिल्कुल गंभीरता से नहीं ले रही जो गुप्तचर एजैंसियों के लिए भारी चिंता का विषय है।'' इस संबंध में प्रतिरक्षा विभाग के एक अधिकारी का कहना है कि ''सैन्य वर्दी से मिलते-जुलते कपड़े की बिक्री पर नजर रखने की जिम्मेदारी संबंधित डिप्टी कमिश्नरों की है तथा सुरक्षा कर्मी अपनी वर्दियां अपनी यूनिटों और सैन्य क्षेत्रों में अधिकृत बिक्री केंद्रों से ही प्राप्त करते हैं।'' जब भी देश में ऐसा हमला होता है तब पुलिस एवं नागरिक प्रशासन की ओर से सैन्य वर्दी खरीदने के संबंध में शर्तें और आदेश लागू किए जाते हैं परन्तु कुछ समय के बाद ये आदेश ठंडे बस्ते में डाल दिए जाते हैं। संबंधित अधिकारियों को इस संबंध में ध्यान देना होगा कि इस दुष्चक्र पर रोक लगाई जाए। जिस प्रकार सेना की वर्दी बेरोक-टोक बिक रही है उसी प्रकार पुलिस की वर्दी भी अवश्य बिकती होगी। अत: यह सुनिश्चित करने की अत्यधिक आवश्यकता है कि सुरक्षा बलों के लिए निर्धारित वर्दियां आदि कोई भी अन्य चीज किसी दूसरे व्यक्ति के पास न पहुंचे जिससे देश की सुरक्षा को कोई खतरा पैदा हो। ❖ **साभार: पंजाब केसरी**

## भारतीय दूतावास की रक्षा को अफगान गवर्नर ने उठा ली बंदूक

अफगानिस्तान में मजार-ए-शरीफ स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास की रक्षा के लिए बल्ख प्रांत के गवर्नर अता मोहम्मद नूर ने बंदूक उठा ली। नूर आतंकवादियों से लोहा लेने के लिए खुद सामने आ गए। 3 जनवरी की रात हथियारों से लैस आतंकवादियों ने भारतीय दूतावास पर हमला कर दिया था। इस में तीन आतंकवादी मारे गए। इंटरनेट पर फैली तस्वीरों के मुताबिक नूर को एक रायफल लिए और निशाना साधते देखा जा सकता है। वह मजार-ए-शरीफ स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास के बाहर सैनिकों से बात भी करते नजर आए। भारतीय वाणिज्य दूतावास की बाहर से निगरानी करते अता मोहम्मद नूर अफगानिस्तान में भारतीय राजदूत अमर सिन्हा ने ट्वीट किया, 'विशेष बलों द्वारा मजार में अभियान जारी है। भीषण लड़ाई जारी है। गवर्नर अता खुद निगरानी कर रहे हैं। दूतावास में सभी सुरक्षित हैं।'❖

## पाक एयरबेस में हमले की ट्रेनिंग लेकर आए थे आतंकी

भारतीय वायुसेना के पठानकोट बेस पर हमला करने वाले 6 आतंकियों ने पाकिस्तान के रावलपिंडी में नूर खान एयरफोर्स बेस पर इसकी ट्रेनिंग ली थी। शीर्ष खुफिया अधिकारियों के मुताबिक इन आतंकियों ने नूर खान एयरबेस में कम से कम 4 बार मॉक ऑप्रेशन किया था। इसके अलावा पाकिस्तान के पंजाब में बहावलपुर में भी इनकी ट्रेनिंग हुई थी। माना जा रहा है कि 4 आतंकियों की बहावलपुर में ट्रेनिंग हुई थी। बाकी 2 आतंकियों की नूर खान एयरबेस में कड़ी ट्रेनिंग हुई थी। इस मॉक ड्रिल में आतंकियों ने चैकिंग प्वाइंट्स को पार करने से लेकर पूरे एयरबेस को अपने कब्जे में लेने की ट्रेनिंग ली थी। इसके अलावा हथियार चलाने और हाथों से लड़ने का भी प्रशिक्षण दिया गया था। सूत्रों के मुताबिक इन्हें किसी भी हालत में गिरफ्तार होने की बजाय खुद को उड़ा लेने के सख्त निर्देश दिए गए थे। एक शीर्ष अधिकारी ने अपना नाम न बताने की शर्त पर कहा कि आतंकियों के हमले से पता चलता है कि उनकी सैनिकों की तरह ट्रेनिंग हुई थी। अभी यह पता नहीं चल सका है कि वे पाकिस्तानी सेना या एयरफोर्स के पूर्व सदस्य तो नहीं थे। ❖

# आतंकवाद पर चाहिए नया नजरिया

पठानकोट सैनिक हवाई अड्डे पर आतंकी हमले ने भारत-पाकिस्तान वार्ता और संबंध सुधारने की प्रक्रिया को पलीता लगा दिया है। सबसे पहले हमारे जांबाज सैनिकों को सलाम करना जरूरी है जिनके बलिदान से ही किसी भयानक वारदात को होने से रोका जा सका है। मेरे पड़ोस की पंचायत गोला के गांव वासा जिला चंबा के जगदीश चंद और उससे पांच-छह किलोमीटर दूर सिहुवां गांव जिला कांगड़ा के संजीवन सिंह, ये दो हिमाचली सपूत भी शहादत को प्राप्त हुए हैं। हवलदार जगदीश ने तो निहत्थे ही एक आतंकवादी पर हमला करके उसी की बंदूक छीन कर उस आतंकी को मौत के घाट उतार दिया। सभी सात शहीदों की बहादुरी को सलाम और शत-शत नमन! हिमाचल सरकार ने शहीदों के सम्मान में 20-20 लाख रूपए की राहत की घोषणा करके सराहनीय काम किया है। उनके शोक संतप्त परिवारों को हर प्रकार की मदद दी जानी चाहिए। पूरा प्रदेश उनके शोक में शामिल है और उनके बलिदान से गौरवान्वित भी।

यह अवसर राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कई सबक लेने का भी है। सैयद सलाहुद्दीन के नेतृत्व में काम करने वाली, कई आतंकी संगठनों की जमात युनाइटेड जेहाद काउंसिल ने हमले की जिम्मेदारी ले ली है। इसलिए पाकिस्तानी नेतृत्व को मजबूर किया जाना चाहिए कि वह आतंकी जमात की स्वीकारोक्ति और भारत में मिले सबूतों के आधार पर इस आतंकी जमात के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई करे। पाकिस्तान उन आतंकी जमातों के खिलाफ हमले कर भी रहा है जो पाकिस्तानी व्यवस्था को ध्वस्त करना चाहती हैं, लेकिन जो भारत या अफगानिस्तान के खिलाफ आतंकी कार्रवाई करते हैं, उन्हें पाकिस्तानी फौज, आईएसआई और अच्छे आतंकी मानती हैं, उन्हें पालती-पोसती है और भारत में घुसपैठ करवाती है। आज अमरीका की रणनीति में सुधार करवाने की जरूरत है। अमरीका पाकिस्तान को आतंकवादियों के खिलाफ लड़ने के नाम पर हथियार और आर्थिक सहायता देता रहता है, लेकिन पाकिस्तान उन संसाधनों का प्रयोग आतंकवादियों के खिलाफ तो नाममात्र ही करता है, बाकी संसाधन भारत को हेकड़ी दिखाने और आतंकी जमातों को पालने पर खर्च करता आया है।

इस बात से अमरीका भी परिचित है, फिर भी वह अनजान बना रहता है। अमरीका इस सच्चाई को जानते हुए भी सुधरने को तैयार क्यों नहीं है? यह उसका दोमुहांपन है या फिर पाकिस्तान को चीन के पाले में पूरी तरह जाने से रोकने का प्रयास भी हो सकता है। वैश्विक आतंकवाद को वैचारिक आधार प्रदान करने, दुनिया के सभी धर्मों के खिलाफ नफरत फैलाने, जिनमें सुन्नी बहावी इस्लाम के अलावा दूसरे मुस्लिम फिरके भी शामिल हैं। दुनिया को यह समझने की जरूरत है कि आतंकी जमात ने जिस तरह अफगानिस्तान में तालिबानी हुकूमत कायम कर ली थी, उसी तरह पाकिस्तान में भी तालिबानी सरकारी की स्थापना की कोशिश हो रही है, ताकि उसकी पहुंच परमाणु हथियारों तक हो जाए। इसके लिए तालिबानी सोच वाली शिक्षा को लागू करके एक कट्टरता समर्थक पीढ़ी को तैयार किया जा रहा है, जो आगे चलकर तालिबानी कैडर का हिस्सा बन सकेंगे। उधर इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकी संगठन भी पाकिस्तान में पहुंच बनाकर स्थिति को और खतरनाक बना सकते हैं। इसलिए इस वैश्विक चुनौती को हल्के में लेने की गलती भारत, पाकिस्तान, अमरीका या किसी भी अन्य देश को नहीं करनी

**पाकिस्तानी नेतृत्व को मजबूर किया जाना चाहिए कि वह आतंकी जमात की स्वीकारोक्ति और भारत में मिले सबूतों के आधार पर इस आतंकी जमात के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई करे। पाकिस्तान उन आतंकी जमातों के खिलाफ हमले कर भी रहा है जो पाकिस्तानी व्यवस्था को ध्वस्त करना चाहती हैं, लेकिन जो भारत या अफगानिस्तान के खिलाफ आतंकी कार्रवाई करते हैं, उन्हें पाकिस्तानी फौज, आईएसआई और व्यवस्था अच्छे आतंकी मानती हैं, उन्हें पालती-पोसती है और भारत में घुसपैठ करवाती है। आज अमरीका की रणनीति में सुधार करवाने की जरूरत है। अमरीका पाकिस्तान को आतंकवादियों के खिलाफ लड़ने के नाम पर हथियार और आर्थिक सहायता देता रहता है, लेकिन पाकिस्तान उन संसाधनों का प्रयोग आतंकवादियों के खिलाफ तो नाममात्र ही करता है, बाकी संसाधन भारत को हेकड़ी दिखाने और आतंकी जमातों को पालने पर खर्च करता आया है।**

चाहिए। जिया उल हक ने सन् 1971 की हार का बदला लेने के लिए जो योजना बनाई थी, पाकिस्तान उसी पर चल रहा है। पंजाब में आतंकवाद की योजना फेल हुई तो कश्मीर को निशाना बनाया गया। अब पाकिस्तान और अफगानिस्तान में कट्टर तालिबानी शासन की स्थापना करने और भारत के खिलाफ अप्रत्यक्ष आतंकी युद्ध छेड़कर भारत को परेशान और कमजोर करने का काम किया जा रहा है। बगदादी के खलीफा राज ने इसमें नए आयाम जोड़ दिए हैं। ऐसे में पूरा देश एक जुबान में बात करे, कांग्रेस, भाजपा या तीसरी शक्ति में बंट कर नहीं। पूरे आतंकी घटनाक्रम को एक कड़ी के रूप में देखा जाना चाहिए। मुंबई हमले के समय गुप्तचर तंत्र को सुधारने के संकल्प पर कितना काम हुआ और जो बाकी है, उसे पूरा करने का काम दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर ही किया जा सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर एक आतंकरोधी पुलिस बल बनाने के रास्ते की अड़चनों को एक-दूसरे पर दोषारोपण से खत्म नहीं किया जा सकता। पाकिस्तान से वार्ता वहां की सेना, आईएसआई और आतंकी संगठनों को कभी पसंद नहीं होती। इसलिए उसमें अड़ंगा तो डालते ही रहेंगे। इस समय अमरीका की मदद से पाक सेना को प्रभावित करने का काम होना चाहिए कि वह पाकिस्तान के अंदर अच्छे और बुरे आतंकवाद का भेद छोड़कर आतंकी नेटवर्क को खत्म करने का काम करे। पाकिस्तान चाहे तो इस अभियान में भारत की मदद भी ले सकता है।❖

साभार: दिव्य हिमाचल

## सुरक्षा घेरा भेद गए आतंकी

सेना की वर्दी में पाकिस्तान से आए छह आतंकवादियों ने पठानकोट एयरफोर्स बेस पर हमला कर उसकी सुरक्षा व्यवस्था पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर और डीजीपी पंजाब सुरेश अरोड़ा ने भी सुरक्षा में खामी की बात स्वीकारी है। आतंकी सामरिक महत्व के एयरबेस में घुस कर कई घंटे रेकी करते रहे मगर किसी को इसकी भनक तक नहीं लगी। स्पष्ट है कि एयरबेस की सुरक्षा व्यवस्था पुख्ता नहीं थी। जिस एयरबेस में वायुसेना के लड़ाकू, हेलीकॉप्टर, जहाज व आयुद्ध भंडार हैं, उसकी सुरक्षा को लेकर इतनी बड़ी लापरवाही क्यों बरती गई, ऐसे कई प्रश्न हैं जिनका उत्तर रक्षा मंत्रालय, एनआइए और पुलिस प्रशासन को अब ढूंढना ही होगा।

### सुलगते सवाल

* आतंकवादियों के पास भारी मात्रा में असलहा व गोली बारूद था। एयरबेस में घुसने के लिए क्या उन्होंने कई फुट ऊंची कंटीली तारें लगी दीवार फांदी या उन्हें भीतर घुसने का रास्ता किसी देश विरोधी तत्व ने बताया?
* रक्षा मंत्री पर्रिकर ने लगभग 24 वर्ग किमी परिधि में फैले घने वृक्षों का उल्लेख किया है। असल में ये घने वृक्ष नहीं बल्कि एयरबेस से सटी नलवा नहर में उगा घना सरकंडा है। वायुसेना ने सरकंडा काट कर पूरे क्षेत्र को समतल बनाने का प्रयास क्यों नहीं किया?
* इतने बड़े सामरिक महत्व के क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर अत्याधुनिक तकनीक जैसे सीसीटीवी कैमरे आदि का इस्तेमाल क्यों नहीं हुआ?
* एयरफोर्स स्टेशन के मुख्य प्रवेश द्वार के साथ बीते कुछ वर्षों में दुकानों का निर्माण हुआ है। उसकी चारदीवारी से सटी कुछ कालोनियों के मकानों की छत से कोई भी देश विरोधी तत्व एयरबेस की रेकी कर सकता है। स्टेशन के साथ भवनों के निर्माण को लेकर नियम क्यों नहीं बनाए गए?
* आयुद्ध भंडारों के एक हजार मीटर क्षेत्र के सन्निकट कोई भी निर्माण कार्य नहीं करवाया जा सकता। पठानकोट एयरबेस में ये नियम क्यों लागू नहीं हुआ?
* क्या एयरबेस की सुरक्षा मजबूत करने के लिए वायुसेना के अधिकारियों ने कभी प्रशासन के साथ इस पूरे क्षेत्र को खाली करवाने के बारे में कोई चर्चा की?
* एयरबेस की चारदीवारी के साथ सुरक्षा के लिए बनाए गए मचानों पर जवानों की तैनाती क्यों नहीं की गई थी? यदि मचानों पर तैनाती होती तो भीतर प्रवेश करने वाले आतंकियों पर समय रहते हमला किया जा सकता था।
* आतंकवादियों ने अपने पाकिस्तान स्थित आकाओं के साथ मोबाइल फोन पर कई बार बात की। सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण वह इतनी आसानी से सीमा पार बात कैसे कर पाए?

# शिव शक्ति संगम पुणे

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हमारी परंपरा शिवत्व की है, जिसे शक्ति का साथ मिले तो विश्व में हमें हमारी पहचान मिलेगी। चरित्र ही हमारी शक्ति है। शीलयुक्त शक्ति के बिना विश्व में कोई कीमत नहीं है। इस महतम उद्‌देश्य के लिए ही शिवशक्ति संगम अर्थात् सज्जनों की शक्ति के प्रदर्शन की आवश्यकता है। सरसंघचालक जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पश्चिम महाराष्ट्र प्रांत की ओर से पुणे के पास जांभे, मारूंजी एवं नेरे गांवों की सीमा पर आयोजित शिवशक्ति संगम के महासांघिक में संबोधित कर रहे थे। पश्चिम क्षेत्र संघचालक डॉ. जयंतीभाई भाडेसिया, प्रांत संघचालक नानासाहेब जाधव, प्रांत कार्यवाह विनायक राव थोरात मंच पर उपस्थित थे। इस महासांघिक में 1 लाख 57 हजार 272 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। अपने लगभग 45 मिनट के भाषण में सरसंघचालक जी ने सामाजिक परिस्थिति के बारे में बताते हुए संघ की स्थापना का महत्व तथा कार्य का विवेचन किया। उन्होंने कहा कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के 125वें जयंती वर्ष में स्त्री शिक्षा की शुरूआत करने वाली सावित्रीबाई फुले की जयंती के दिन पर विराट शिवशक्ति संगम प्रशंसास्पद है। शिवशक्ति कहने पर हमें छत्रपति शिवाजी महाराज का स्मरण आता है, अपने स्थापन पर उचित राज करने वाला यह पहला राजा था। सीमित राज्य में राष्ट्र का विचार करने वाला यह राजा था। धर्म का राज्य चले, यह सोचने वाले आदर्श हिंदवी स्वराज्य के शिवाजी संस्थापक थे। उनके द्वारा किया गया संगठन तत्व निष्ठा के कारण हमने भगवा ध्वज को गुरु माना है। हमारी परंपरा शिवत्व की है। सत्य, शिव, सुंदरम हमारी संस्कृति है, समुद्र मंथन से जो हलाहल निर्माण हुआ, उसकी बाधा विश्व को न हो इसलिए जिन्होंने प्राशन किया, वे नीलकंठ हमारे आराध्य देवता हैं, उनके आदर्श की तरह हमारी यात्रा जारी है। शिवत्व की परंपरा शाश्वत अस्तित्व के तौर पर जानी जाती है, शिव को शक्ति का साथ मिलना चाहिए, शिव को शक्ति के सिवाय समाज नहीं जानता, विश्व में शक्तिमान राष्ट्रों की बुराई पर चर्चा नहीं होती, वे हम चुपचाप सह लेते हैं, लेकिन अच्छे, परन्तु शक्ति में कम राष्ट्रों की अच्छी बातों पर चर्चा नहीं होती। उन राष्ट्रों की अच्छी सभ्यता को बहुमान नहीं मिलता। संविधान लिखते समय डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने कहा था कि राजनीतिक एकता आई है, किंतु आर्थिक और सामाजिक एकता के बिना वह टिक नहीं सकती।

भागवत जी ने कहा कि हम कई युद्ध दुश्मन के बल के कारण नहीं, बल्कि आपसी भेद के कारण हार गए, भेद भूलाकर एक साथ खड़े न हो तो संविधान भी हमारी रक्षा नहीं कर सकता। व्यक्तिगत और सामाजिक चरित्रनिष्ठ समाज बनना चाहिए। सामाजिक भेदभावों पर कानून में प्रावधान कर समरसता नहीं हो सकती। समरसता हेतु आचरण का संस्कार करना पड़ता है, जिसके लिए समरसता का संस्कार करने की आवश्यकता है। मातृभूमि के लिए आस्था यह हिन्दू समाज का स्वभाव है, परंपरा से आई हुई यह आस्था है। इसके आधार पर संस्कृति बढ़ती है, पुरखों का गौरव होता है। आज विश्व को इसकी आवश्यकता है। भारतीय मूल्यों की प्रतिस्थापना करने हेतु संगठन की आवश्यकता है। राष्ट्रीय चरित्र वाले समाज का निर्माण करना और देश को परम वैभव प्राप्त करवाना, यह संघ का कार्य है।

किसी भी प्राकृतिक विपत्ति के समय आगे आने वाला स्वयं सेवक यह संघ की पहचान है। अपने हित का विचार छोड़कर समाज के तौर पर निरालस, निस्वार्थ सेवा करने वाला अर्थात् संघ स्वयंसेवक। यह गर्व का नहीं, अपितु 90 वर्षों से संघ जो कर रहा है, उस प्रयोग का फल है। नेता, सरकार पर देश नहीं बढ़ता, बल्कि चरित्रसंपन्न समाज पर वह टिका रहता है। चरित्रसंपन्न व्यक्ति के वर्तन से ही समाज का परिवर्तन होता है। शिव-शक्ति संगम अर्थात् वैभव प्रदर्शन नहीं है, बल्कि समाज परिवर्तन के लिए सही रास्ता है, देश प्रतिष्ठित, सुरक्षित न हो तो व्यक्तिगत सुख की कीमत नहीं है। सभी जिम्मेदारियां संभालकर समाज सेवा करने वाली शक्ति अर्थात् संघ का कार्य, समाजहित के इस कार्य में सब सक्रिय हों। ❖

## सेवित को स्वावलंबी बनाकर समाज का सेवक बनाना है-सुहासराव हिरेमठ

इन्दौर 'विसंकें' इन्दौर के एमरॉल्ड इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित विश्व संघ शिविर के तीसरे दिन अलग-अलग भागों में सत्र हुए. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख सुहासराव जी हिरेमठ ने विदेशों में सतत् सेवा कार्यों में लगे कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। उन्होंने सेवाभाव का अर्थ और उद्देश्य रखा। उन्होंने कहा कि सेवा कार्यों को भारत में चार आयामों में बांटा गया है। 'शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक, स्वावलंबन। आज पूरे भारत में 1 लाख 52 हजार 388 सेवा कार्य चलाये जा रहे हैं। हमारा लक्ष्य है कि आज हम जिन सेवित की सेवा कर रहे हैं, जल्द से जल्द वह आत्मनिर्भर बनें और वह आत्मनिर्भर बनने के बाद समाज में सेवक के रूप में कार्य करें। आज का सेवित जिसकी हम सेवा कर रहे हैं, वह सेवक बने।'

विश्व संघ शिविर में शिविरार्थियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं महेश्वर के किले की रंगोली से बनी आकृति को सबने बहुत सराहा। प्रातः उठकर शिविरार्थियों द्वारा नियमित कार्यक्रम करना एवं मातृशक्ति द्वारा दण्ड संचालन व योग का अभ्यास होता है। पुरुषों द्वारा भी योगाभ्यास, खेल आदि का नियमित कार्यक्रम प्रातः एवं सायंकाल चलता है। इससे एकाग्रता और स्फूर्ति विद्यमान रहती है तथा हमें अनुशासन की भी प्रेरणा मिलती है।

हिन्दू स्वयंसेवक संघ के संयोजक सौमित्र गोखले ने मीडिया से चर्चा करते हुए बताया कि इन्दौर में शिविरार्थियों का अनुभव बहुत अद्भुत है। शिविर में अपने-अपने देशों में जो कार्य हो रहे हैं, उनको कैसे बेहतर बनाना है, इस संबंध में एक दूसरे के अनुभवों को आपस में बांट रहे हैं। इसके अतिरिक्त शिविर में टैक्सास (यूएस) से आये रमेश पूनमचंद शाह ने भी मीडिया से अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि एकल विद्यालय के लिए विदेशों में बहुत जागरूकता फैलाई है। वे पिछले सत्रह वर्षों से कार्य को कर रहे हैं। शिविर में राष्ट्रपति सेना मेडल से सम्मानित मेजर सुरेन्द्र नारायण माथुर ने बताया कि वह अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य करते हैं और उन्होंने कार्य को करते हुए अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम को गति प्रदान की है, जिसकी सराहना विदेशों में हो रही है। शिविर में न्यूजीलैण्ड से आए प्रोफेसर जीएन मंगेशन ने भी अपने अनुभव मीडिया के समक्ष साझा किये। ***साभार: विश्व संवाद केन्द्र***

## स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएं वर्तमान में भी प्रासंगिक

शिमला (विसंकें). हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानन्द के 153वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में ''स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं की प्रासंगिकता'' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। कुलपति आचार्य अरूण दिवाकर नाथ वाजपेयी ने विवेकानन्द जी की शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाने और अपने जीवन में आत्मसात् करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानन्द युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं तथा उनके भविष्य की योजनाओं और सर्वांगीण विकास के लिए स्वामी विवेकानन्द की शिक्षायें आज भी महत्वपूर्ण हैं। विश्वविद्यालय में शीघ्र ही स्वामी विवेकानन्द पीठ स्थापित की जाएगी, जिसके माध्यम से स्वामी विवेकानन्द के विचारों को एकत्रित कर प्रकाशित किया जाएगा तथा इस पीठ के माध्यम से विवेकानन्द और उनकी शिक्षाओं पर आधारित विचार गोष्ठियां आयोजित की जाएंगी।

कुलपति ने कहा कि आज विवेकानन्द के नाम पर जो राजनीति हो रही है, वह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है तथा युवाओं से आह्वान किया कि वे विवेकानन्द की शिक्षाओं का अध्ययन पूर्ण रूप से करें, जिससे उनका न केवल शैक्षणिक विकास बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान भी बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं का आज और भी महत्व बढ़ जाता है, जब विश्व एक ओर आतंकवाद की लड़ाई से जूझ रहा है, तो दूसरी ओर विकासशील देशों में चहुंमुखी विकास के लिए स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं से ज्ञान लेने की नितान्त आवश्यकता है। इस अवसर पर प्रतिकुलपति आचार्य राजेन्द्र सिंह चौहान ने युवा वर्ग को स्वामी विवेकानन्द के रास्तों पर चलने का आह्वान किया तथा कहा कि युवाओं को प्रत्येक दिन स्वामी विवेकानन्द की एक शिक्षा का अध्ययन कर उस पर अमल करना चाहिए। ❖

# भक्ति एवं कर्म के उपासक-संत रविदास

संत रविदास कर्मयोग के प्रबल उपासक थे। वह जीवन में कर्म को भी अपना प्रमुख धर्म मानते थे। अपनी वाणी में उन्होंने कहा है- ''कर्म मनुष्य को धर्म है सत भाषै रविदास।'' कर्ममय जीवन में ही मनुष्य को सत्य के दर्शन होते हैं। अपनी कर्म और भक्ति साधना से उन्होंने धर्म और कर्म की महत्ता को प्रतिपादित किया। संत रविदास का जन्म माघ पूर्णिमा रविवार संवत् 1433 (सन् 1376) को काशी के समीप मनडूर ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम रघुनाथ और माता का नाम धुरबिनिया था, दोनों ही बड़े भगवद् भक्त थे। रविवार को जन्म होने के कारण इनका नाम रविदास रखा गया जो बोलचाल की भाषा में रैदास हो गया। इनके बचपन में स्वामी रामानन्द का इनके घर में आना हुआ। बाल्यकाल में ही रविदास में दैवीय गुण विकसित होने लगे। संत सेवा से ये बड़े प्रसन्न होते एवं संत आगमन से झूम उठते। इन्हीं दैवीय गुणों को देखकर माता-पिता ने बचपन में ही इनका विवाह कर दिया। यह भी विधि का संयोग ही था कि रविदास को पत्नी भी परम सती साध्वी मिली जो इनके भक्ति मार्ग में सदैव सहयोगी बनी रही। संत रविदास जूते बनाकर अपने परिवार का काम चलाते थे। परिवार की स्थिति अच्छी नहीं थी। फिर भी गरीबों की सदा सहायता करते थे। प्रतिदिन एक जोड़ा जूता किसी गरीब को बिना मूल्य के दे देते थे और अपनी आर्थिक स्थिति से संतुष्ट रहते थे। पंचगंगा घाट के प्रसिद्ध संत स्वामी रामानन्द के बारह प्रधान शिष्यों में संत रविदास भी प्रमुख हैं। स्वामी रामानन्द से गुरु दीक्षा लेकर ही रविदास ने प्रभु राम की भक्ति करने और भजन करने की गुरु आज्ञा ली। अपना काम करते हुए भजन करना और अपने शिष्यों को भक्ति भाव में डुबो देना ही रविदास की दिनचर्या बन गई। मीरा के गुरु रैदास-रविदास ने अपने कर्म प्रधान जीवन में यह सिद्ध कर दिया कि त्याग, समर्पण और भगवद्भक्ति से ही व्यक्ति ऊंचा उठता है। रविदास का भक्ति भाव देखकर ही काशी नरेश उनके शिष्य बने। चितौड़ के महाराणा उदय सिंह की पत्नी झाली रानी उनकी शिष्या बनी। चितौड़ की कुलवधू मीरा ने भी भक्त रविदास को ही अपना गुरु स्वीकार किया। भक्त रविदास की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल रही थी, तभी चितौड़ दुर्ग के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के लिए महाराणा ने संत रविदास को गुरुपद प्रदान कर, उनके चरणों की पूजा की। संत रविदास केवल उच्च कोटि के संत ही नहीं थे वरन् भक्त कवि भी थे।

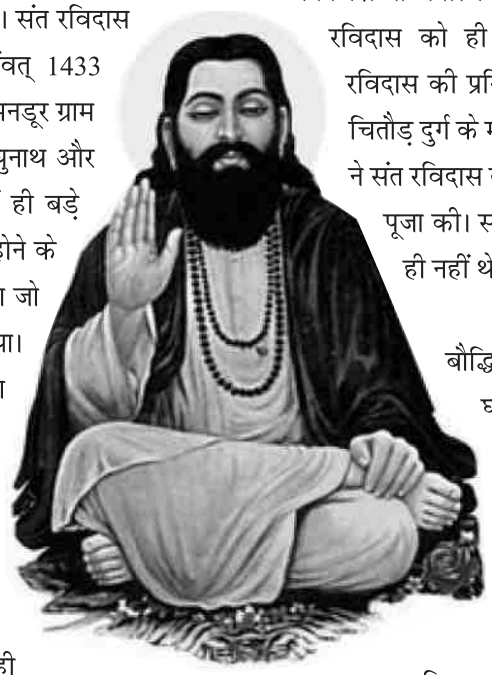

उनकी रचनाओं में आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं सामाजिक क्रांति थी। उनके घर पर सभी वर्गों एवं वर्णों के लोगों का सत्संग हेतु मेला लगा रहता था। यह उस समय की बात है जब समाज ऊंच-नीच, अमीर-गरीब जाति-पाति की कुरीतियों से बुरी तरह ग्रस्त था। ऐसे समय में संत रविदास ने अपने भजनों, पदों एवं वाणियों से समाज को समरसता की मुख्यधारा में लाने का कार्य किया। भक्त रविदास को पूरे देश में सम्मान मिला।

पंजाब में जब गुरु ग्रंथ साहब की रचना के लिए संतों के भजन और पद एकत्र किए गए, तब रविदास जी के 41 पदों को भी श्री गुरु ग्रंथ साहब में प्रतिष्ठा मिली। इस प्रकार संत रविदास के भजन घरों, मंदिरों के साथ गुरुद्वारों में गाए जाने लगे। हिन्दू समाज में अपने आपको ''रैदासी'' कहने वाले वर्ग को गौरव की अनुभूति हुई। संत कबीर ने भी संतन में रविदास संत हैं' कहकर इनके प्रति श्रद्धा प्रकट की है। चौदहवीं और पंद्रहवीं सदी को अपनी कर्म साधना से धन्य करते हुए संत रविदास ने सन् 1527 में अपनी नश्वर देह का त्याग किया। ❖

## बंगलूरू में बन रहा स्पेस पार्क

निजी कंपनियां इसरो के लिए बनाएंगी सेटेलाइट-रॉकेट पार्ट्स भारतीय अंतरिक्षा एजेंसी ने बंगलूर में 100 एकड़ क्षेत्र में स्पेस पार्क का निर्माण किया है। यहां निजी कंपनियां इसरो के विभिन्न प्रोजेक्ट्स के लिए सेटेलाइट और रॉकेट पार्ट्स बनाएंगी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र (इसरो) के सेटेलाइट केंद्र के निदेशक एम. अन्नादुरई ने विज्ञान कांग्रेस के दौरान बताया कि बंगलूर में व्हाइटफील्ड के नजदीक निजी क्षेत्र के लिए स्पेस पार्क बनाया गया है। यह 100 एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में फैला हुआ है। आने वाले दिनों में इसरो नेविगेशन, रिमोट सेंसिंग इत्यादि सेवाओं के लिए कई सेटेलाइट लांच करने की तैयार में है। इस पार्क में निजी कंपनियां इन सेटेलाइट्स के लिए पार्ट्स बनाएंगी, ताकि अंतरिक्ष तकनीक के क्षेत्र में तेजी से काम हो। अन्नादुरई ने कहा कि हमने निजी कंपनियों से कहा है कि वे

अपनी क्षमता को तेजी से बढ़ाएं या फिर स्पेस पार्क में अपना संयंत्र लगाएं और हमारी सुविधाओं का इस्तेमाल कर हमारी सेटेलाइट्स के लिए पार्ट्स बनाएं। इसरो रॉकेट और सेटेलाइट की 80 फीसदी से अधिक कलपुर्जों का निर्माण निजी क्षेत्र से कराती है। इसके अलावा इसरो के लिए देश भर की 500 से ज्यादा छोटी और बड़ी यूनिट्स पार्ट्स का निर्माण करती हैं। अन्नादुरई ने यह भी कहा कि यह स्पेस पार्क सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल को आगे बढ़ाएगा।❖

## भारत में आतंक के लिए चर्च देता है पैसाः भूतपूर्व सांसद खगन दास

सीपीआई (एम) के एक वरिष्ठ नेता और पूर्व सांसद खगन दास ने चर्च पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने दावा किया है कि बाहरी एजेंसियां चर्च का उपयोग भारत में आतंकी और अलगाववादी आंदोलन चलाने वालों को फंड देने के लिए करती हैं। खगन दास त्रिपुरा में अलग से आदिवासी लैंड की मांग करने वाली नई पार्टी आईपीएफटी के संबंध में बोल रहे थे। खगन दास ने बताया कि 1980 की सांप्रदायिक हिंसा और 30 साल से चली आ रही अलगाववादी गतिविधियों को लेकर ये सिद्ध हो चुका है कि चर्च के माध्यम से उग्रवादियों के पास पैसे आए। उन्होंने बताया कि, चर्चों का एक समूह केवल त्रिपुरा राज्य में ही नहीं अपितु इस पूरे क्षेत्र में आदिवासी विद्रोह को सक्रिय तौर पर सहयोग करता रहा है। इसके अलावा ऐसे अलवगाववादी आंदोलनों को पैसा भी देता रहा है। अपनी बातों के समर्थन में उन्होंने किम दवी की ओर से न्यायालय में किए गए खुलासे का जिक्र किया। किम पश्चिम बंगाल के पुरूलिया में हथियार गिराने के प्रसिद्ध कांड का अभियुक्त था। किम ने अपने वक्तव्य में कहा था कि उसकी टीम ने केवल पुरूलिया में हथियार नहीं गिराए थे, सन् 1995 और 1996 में त्रिपुरा के चरमपंथियों को भी हथियारों की सप्लाई की गई थी।❖ **साभारः पथिक संदेश**


शुभकामनाओं सहित

**बाबा बाल जी**

**कोटला कलां**
**ज़िला ऊना**
**हिमाचल प्रदेश**

**सभी भक्तों को बसंत पंचमी की हार्दिक शुभकामनाएं**

# कहां गायब हो गए कश्मीर के 80 मंदिर?

बीजू जनता दल (बीजद) ने जम्मू-कश्मीर में तेजी से गायब हो रहे मंदिरों का मामला उठाते हुए संसद में सरकार से प्रश्न पूछा कि 2009 से अभी तक जम्मू-कश्मीर में 80 मंदिर गिराए जा चुके हैं। इसके साथ ही सरकार से प्रश्न किया कि वह ऐसे अलगाववादी नेताओं को सुरक्षा क्यों प्रदान करवा रही हैं, जो लगातार भारत विरोधी गतिविधियों में शामिल हैं या रहे हैं। भाजपा के निशिकांत दुबे द्वारा लाए गए प्रस्ताव पर बोलते हुए बीजद के भर्तृहरि महताब ने कहा कि, केंद्र सरकार द्वारा प्रदान कराई गई सूची के अनुसार, कम से कम 80 मंदिर गायब हैं। सूची के अनुसार सन् 1989 से पहले कश्मीर में 436 मंदिर थे। 266 मंदिर सही स्थिति में थे और 170 क्षतिग्रस्त। इसके बाद 90 मंदिरों का पुनर्रूद्धार किया गया था। वहां के बाकी 80 मंदिर कहां गए? उन्होंने कहा कि सन् 1989 में कश्मीरी पंडितों के खिलाफ शुरू हुए अभियान व आतंकियों के डर से 1989 से अब तक 3.5 लाख हिंदू वहां से घर छोड़कर कहीं और जाकर बस गए हैं। इसके साथ ही महताब ने केंद्र से पूछा कि, वो भारत के खिलाफ वक्तव्य देने वाले अलगाववादी नेताओं को सुरक्षा क्यों प्रदान कराती है। उन्होंने पूछा कि, अलगाववादी नेताओं की सुरक्षा पर सरकार कश्मीर में कितना पैसा खर्च करती है और तब भी जब वे पाकिस्तानी हाई कमिश्नर से भेंट के लिए दिल्ली आते हैं। महताब ने कहा कि वे इस सरकार से उत्तर सुनना चाहेंगे क्योंकि मुझे लगता है कि यह सरकार संसद में रखे गए प्रश्नों का उत्तर देती है। महताब की ओर से ये आंकड़े दिखाए गए। ये आंकड़े गृह सचिव द्वारा संसद को दिए गए थे। इसमें दिखाया गया कि सन् 1989 में कश्मीर में 436 मंदिर थे।

❖ साभार: पथिक संदेश


# सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक आवासीय विद्यालय

## हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला-171009

*केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त*

*(संचालित हिमाचल शिक्षा समिति-सम्बद्ध विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान)*

**प्रवेश प्रारम्भ**

**सत्र 2016-17**

- कक्षा नर्सरी से नवम् तक और 10+1 (विज्ञान संकाय) कक्षा 6वीं से 12वीं तक छात्रावास सुविधा उपलब्ध (केवल लड़कों के लिए)
- कक्षा 9वीं और 10+1 तथा छात्रावास के लिए प्रवेश परीक्षा 18 फरवरी, 2016 को होगी।

*अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:*

**प्रधानाचार्य, स.वि.म.व.मा.वि.**

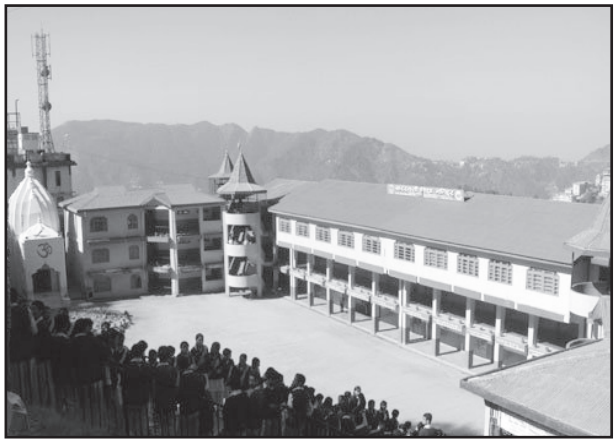

**हिम रश्मि परिसर, विकासनगर, शिमला-9**

**दूरभाष: 0177-2622308, मो.: 94180-18527, 94182-76324**

**अणु डाक: svmhimrashmi@gmail.com**

**वेब साईट: www.svmhemrashmi.org**

## हि.प्र. विश्वविद्यालय में एबीवीपी ने मनाई स्वामी विवेकानंद जयंती

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के विज्ञान भवन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष डॉ. चमन लाल गुप्त मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रांत संगठन मंत्री आशीष सिक्टा ने विवेकानंद के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि युवाओं में जब भी चरित्र के अनुकरण की बात की जाती है तो स्वामी विवेकानंद को सर्वप्रथम याद किया जाता है। स्वामी जी ने विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार किया। अमेरिका में स्वामी जी को प्राच्य दर्शन के आचार्य पद पर तथा कोलम्बिया विवि में संस्कृत आचार्य के पद पर नियुक्त करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उन्होंने भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार को प्राथमिकता दी जो आज की विदेशी संस्कृति को अपनाने वाले भारतीय युवाओं के लिए एक संदेश है। डॉ. चमनलाल गुप्त ने शिकागो में हुई धर्मसंसद का जिक्र करते हुए कहा कि यह विदेशी संस्कृति के आडम्बर का प्रदर्शन मात्र था, जिसका उद्देश्य मात्र इसाई धर्म का प्रचार करना था। स्वामी जी 17 सितंबर से लेकर 27 सितंबर तक के अपने भाषणों में छाये रहे। उनकी वेदांत की व्याख्या, सर्वधर्म समभाव का आदर्श और विश्व-बंधुत्व का सिद्धांत अमरीका वासियों को खूब भाया। उन्होंने पाश्चात्य चिंतन में भारतीय चिंतन को प्राथमिकता दी, जिससे भारतीय संस्कृति को विदेशों में आदर की दृष्टि से देखा जाने लगा। स्वामी जी की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जो वैज्ञानिक अपने शोधकार्य में खाने-पीने का समय नहीं निकाल पाते थे, वे घंटों तक इनके उद्बोधन का इंतजार करते थे। स्वामी जी के विचारों को अपना कर भारत विश्व के शीर्षपटल पर अपना स्थान बना सकता है। युवाओं को इनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।❖

## चंबा में हिन्दू संगठनों ने गौकशी के खिलाफ धरना प्रदर्शन किया एवं रौष रैली निकाली

शिमला (विसंकें) गोहत्या के मामले को लेकर हिमाचल प्रदेश पुलिस महानिदेशक द्वारा दिये गये बयान से जनता का गुस्सा बढ़ रहा है। विश्व हिन्दू परिषद एवं विभिन्न धार्मिक संगठनों ने पुलिस महानिदेशक के बयान को लेकर विरोध जताया तथा इसे आपत्तिजनक करार दिया। गोहत्या के आरोपियों के पकड़े न जाने तथा पुलिस महानिदेशक के बयान के विरोध में जिला मुख्यालय में हिन्दू संगठनों तथा स्थानीय लोगों ने रोष रैली निकाली। हिमाचल प्रदेश के चंबा जिला मुख्यालय में रोष रैली निकालकर महानिदेशक से सार्वजनिक रूप से माफी मांगने की मांग की।

गौरतलब है कि चंबा जिला में गोहत्या की घटना सामने आने के बाद लोगों में रोष पनपने लगा था एवं हिन्दू संगठनों का विरोध मुखर हो रहा था। ऐसे में पुलिस महानिदेशक ने पुलिस को त्वरित कार्रवाई कर आरोपियों को पकड़ने में तत्परता दिखाने के निर्देश देने के बजाय संगठनों के प्रतिनिधियों पर ही सवाल खड़े करने शुरू कर दिए। प्रतिनिधियों पर सांप्रदायिकता फैलाने का आरोप मढ़ दिया। जिससे जनता का रोष और बढ़ गया। संगठनों की ओर से राज्यपाल से भी मामले की शिकायत की गई है।

जिला मुख्यालय में रोष रैली निकालने के साथ ही जिला व्यापार मंडल ने घटना की कड़ी निंदा करते हुए जिला में बंद रखा गया। हिंदू संगठनों के प्रतिनिधि जिला मुख्यालय में एकत्र हुए। चंबा के प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मंदिर से शुरू होकर रोष रैली सभी मोहल्लों से होती हुई जिला मुख्यालय के मुख्य चौक तक गयी। वहां पर एक घंटे तक जोरदार नारेबाजी तथा धरना प्रदर्शन किया। धरने व रोष रैली को संगठनों के पदाधिकारियों द्वारा संबोधित किया गया। वक्ताओं ने कहा कि चंबा में घटी घटना का वे पुरजोर विरोध करते हैं। इससे हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची है। पुलिस महानिदेशक द्वारा दिया गया बयान आपत्तिजनक है, जिसे अराजकता फैलाने वाला माना जायेगा। इस रैली के पदाधिकारियों ने उपायुक्त चंबा एम. सुधादेवी से दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। उपायुक्त ने दोषियों को शीघ्रातिशीघ्र पकड़ने की और उनके खिलाफ कार्यवाही का भरोसा दिलाया। इस बीच घटनास्थल पर पुलिस ने छानबीन की। पुलिस अधीक्षक चंबा वीरेंद्र तोमर ने लोगों को विश्वास दिलाया कि ऐसा जघन्य कार्य करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही अमल में लायी जायेगी।❖

# विश्व का एकमात्र अर्द्धनारीश्वर मंदिर (काठगढ़ महादेव)

– विक्रम ठाकुर (बिट्टू)

देवभूमि हिमाचल प्रदेश के कण-कण में बसे हैं देवी देवता। देवभूमि हिमाचल में बहुत से आस्था के केंन्द्र विद्यमान हैं। ऐसा ही कांगड़ा जिले के इंदौरा उपमंडल में स्थित काठगढ़ महादेव मंदिर लोगों की आस्था का केन्द्र है। मन्दिर के दक्षिण में ब्यास नदी बहती है। तथा इसी धार्मिक स्थल पर दो नदियों का संगम भी होता है। यह दुनिया का ऐसा एकमात्र मंदिर है जहां शिवलिंग ऐसे स्वरुप में विद्यमान हैं जो दो भागों में बंटे हुए हैं अर्थात् मां पार्वती और भगवान शिव के दो विभिन्न रूपों को ग्रहों और नक्षत्रों के परिवर्तित होने के अनुसार इनके दोनों भागों के मध्य का अंतर घटता-बढ़ता रहता है। ग्रीष्म ऋतु में यह स्वरूप दो भागों में बंट जाता है और शीत ऋतु में पुन: एक रूप धारण कर लेता है। शिव रूप में पूजे जाने वाले शिवलिंग की ऊंचाई 7 से 8 फुट है जबकि मां पार्वती को समर्पित शिवलिंग की ऊंचाई तकरीबन 5 फुट है। इसी रहस्य के कारण यह मंदिर लोगों की आस्था का केंन्द्र बना हुआ है। काठगढ़ मंदिर के महत्व के बारे में कई कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि इस मंदिर के बारे में शिव पुराण में भी व्याख्या मिलती है। काठगढ़ नामक यह स्थान महाराजा दशरथ का भी पूजा स्थल रहा है। ऐसा कहा जाता है कि त्रेता युग में जब महाराज दशरथ का विवाह हुआ था तो उनकी बारात पानी पीने के लिए यहां रुकी थी और यहां एक कुएं का निर्माण किया गया था। जोकि आज भी यहां स्थापित है। जब भी भरत व शत्रुघ्न अपने ननिहाल कैकेय देश वर्तमान (कश्मीर) जाते थे तो ब्यास नदी के पवित्र जल से स्नान करके राजपुरोहित व मंत्रियों सहित यहां स्थापित शिवलिंग की पूजा अर्चना कर आगे बढ़ते थे। एक किवदंती में कहा गया है कि इस मंदिर ने महाराजा रणजीत सिंह के कार्यकाल में सबसे ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त की थी। क्योंकि इससे पहले यहां पर मंदिर का निर्माण नहीं था और भगवान भोले शंकर खुले आसमान के नीचे बिना छत के रहते थे। जब इस बात का पता महाराजा रणजीत सिंह को चला तो उन्होंने इस मंदिर का निर्माण करवाया और शिवलिंग की इस महिमा का गुणगान भी चारों ओर करवाया। आज भी समूचे भारतवर्ष से श्रद्धालु यहां सदाशिव महादेव के दर्शन के लिए आते हैं। प्रत्येक वर्ष महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर यहां पर तीन दिवसीय मेला भी होता है, इस मंदिर में आने के लिए हिमाचल व पंजाब दोनों ओर से पहुंचा जा सकता है। हिमाचल की तरफ से जाने के लिए कांगड़ा से नूरपुर, बाया इंदौरा राजमार्ग पर जाना पड़ता है। पठानकोट से 22 किलोमीटर बाया इंदौरा, मीरथल पंजाब से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ❖

# बीआरओ के जवान को भारत सरकार का सम्मान

उपमंडल नालागढ़ के पल्ली गांव के एक साधारण किसान व चूड़ा राम धीमान के घर पैदा हुए इन्जीनियर राम आसरा खुराल को भारत सरकार ने पंडित जवाहर लाल नेहरू शताब्दी अवार्ड से नवाजा है। बॉर्डर रोड़ आर्गेनाईजेशन भारत सरकार में कार्यकारी अभियंता के पद पर तैनात रामआसरा यह अवार्ड प्राप्त करने वाले बीबीएन के पहले जबकि हिमाचल के दूसरे व्यक्ति हैं। यह सम्मान रामआसरा को हाईवे इन्जीनियरिन्ग में बेहतरीन कार्य के निष्पादन करने के लिए लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने प्रदान किया। मंत्रालय के वार्षिक समारोह इंदौर में आयोजित इस कार्यक्रम में सडक परिवहन राजमार्ग एवं जहाजरानी मंत्री नितिन गडकरी व सीएम शिवराज सिंह चौहान भी विशेष तौर पर मौजूद थे। यह अवार्ड इन्जीनियर, प्रौफेसर व वैज्ञानिकों को इनके क्षेत्र में निभाए गए उन्ल्लेखनीय कार्यों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रदान किया जाता है। रामआसरा खुराल ने सीमावर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण में उत्कृष्ट कार्य किया है। उनकी सूझ-बूझ व त्वरित एक्शन से हिन्दुस्तान-तिब्बत मार्ग जो कि बाढ में बह गया था की बहाली हुई थी और आवाजाही सुचारू बनी। उनके नाम की संस्तुति हिमाचल के राज्यपाल ने भी की थी और उनका नाम शौर्य चक्र के लिए भी केंद्र सरकार को भेजा गया है। ❖

# पूरा साल करें पालक की खेती

यूं तो हिमाचल प्रदेश में पूरा साल पालक की खेती की जा सकती है परन्तु तराई और निचले पहाड़ी इलाकों में सर्दियां ही इस खेती का सही व उपयुक्त समय है।

**उन्नत किस्में:**

**बैनर्जी जायण्ट:** स्वस्थ, लम्बे फूले हुए पत्ते तथा आम पालक से दोगुने बड़े। उर्वरा मिट्टी की आवश्यकता। औसत उपज 150-190 क्विंटल प्रति बीघा। पहाड़ी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।

**लॉग स्टैडिंग:** पत्ते गहरे रंग के तिकोने, मोटे, लम्बे तथा धीरे-धीरे फैलने वाले तने अधिक फसलदायक। औसत उपज 100-125 क्विंटल प्रति हैक्टेयर यानी 8-10 क्विंटल प्रति बीघा। शुष्क एवं शीत तथा ऊंचाई वाली पहाड़ी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।

**वर्जीनिया सेवोय:** नर्म बीज वाली, पौधे सीधे स्वस्थ, गहरे हरे रंग के, आगे से पत्ते गोलाई वाले कुछ मुड़े तथा मोटे। औसत उपज 100-125 क्विंटल प्रति हैक्टेयर यानी 8-10 क्विंटल प्रति बीघा। मध्य तथा ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म।

**पूसा हरित:** मध्यम लम्बे पौधे, चौड़े गहरे हरे तथा थोड़े मुड़े पत्ते, 40-50 दिन बाद कटाई के लिए तैयार। औसत पैदावार 250-280 क्विंटल हैक्टेयर यानी 20-25 क्विंटल बीघा। बसंत तथा गर्मियों के मौसम में उगाने के लिए उपयुक्त किस्म, क्षेत्र 1 तथा 2 के लिए उपयुक्त किस्म।

**बुवाई का समय:**

**निचले पहाड़ी क्षेत्र:** जुलाई-नवम्बर और फरवरी-मार्च।

**मध्य पहाड़ी क्षेत्र:** जुलाई-सितम्बर।

**ऊंचे पहाड़ी क्षेत्र:** मार्च-जून, सितम्बर।

**बीच की मात्रा:** 25-30 और 10 सैं.मी.।

**खाद एवं उर्वरक:** गोबर की खाद 100 क्विंटल प्रति हैक्टेयर या 8 क्विंटल प्रति बीघा।

* जैविक खेती के लिए दोगुणा कंपोस्ट।
* कैन 300 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर या 25 कि.ग्रा. प्रति बीघा।
* सुपर फॉस्फेट 315 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर या 25 कि.ग्रा. प्रति बीघा।
* म्यूरेट ऑफ पोटाश 50 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर या 4 कि.ग्रा. प्रति बीघा।
* गोबर की खाद, सुपर फॉस्फेट तथा म्यूरेट ऑफ पोटाश की पूर्ण मात्रा और कैन की आधी मात्रा बुवाई करते समय डालें और शेष केन का आधा भाग उसके लिए मास बाद डालें।

**बीजोत्पादन**

* बीजोत्पादन के लिए फस्ल सामान्य फसल की ही तरह लगाई जाती है तथा खाद व उर्वरकों की मात्रा बुवाई के समय ही दी जाती है।
* पृथकीकरण के लिए एक किलोमीटर का अंतर रखें।
* अग्रजी पालक लॉग स्टैडिंग तथा वर्जीनिया सेवोय में चार प्रकार के पौधे पाए जाते हैं: नर, वानस्पतिक नर, द्विलिंगी तथा मादा। जिनमें से केवल मादा तथा द्विलिंगी पौधों पर ही बीज लगते हैं। नर पौधे कमजोर होते हैं उन्हें उखाड़ कर फैंक देना चाहिए।

**तुड़ाई और गहाई:** बीज लगभग एक ही समय पर पक जाता है। अत: इसका खेत में बिखरने का कम डर रहता है।

* बीज के साथ पूरे पौधे को सुखाकर उसकी गहाई की जाती है।

**बीज प्राप्ति:** 600-800 कि.ग्रा. हैक्टेयर यानी 48-64 कि.ग्रा. बीघा।

# तिरूपति मंदिर देगा 5.5 टन सोना

दुनिया के सबसे अमीर मंदिर ने केन्द्र सरकार की एक अहम योजना के लिए मदद करने के लिए पहल की है। तिरूपति मंदिर अपने यहां जमा करीब 5.5 टन सोना सरकार के पास जमा करवा सकता है, जिससे अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाने वाले आयात को कम किया जा सके। रिपोर्ट के मुताबिक, केंद्र सरकार की ''गोल्ड मोनेटाइजेशन स्कीम'' को एक महीने में केवल एक कि.ग्रा. सोना ही मिल सका है। जबकि स्कीम के तहत 20 हजार टन से भी ज्यादा सोना इकट्ठा किया जाना है। इस स्कीम का मकसद लोगों, संस्थाओं और अमीर मंदिरों को मनाना है, जिससे वे अपने सोने के भण्डार में से एक हिस्से को बैंकों में जमा कराएं, जिससे उसे रिसाइकल किया जा सके। **साभार: बिरसा हुंकार**

## सन् 2030 के बाद भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

ब्रिटेन के सेंटर फॉर इकोनॉमिक्स बिजनेस एंड, रिसर्च (सीईबीआर) की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2030 के बाद भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि इसके परिणामस्वरूप जी-8 में से फ्रांस और इटली को बाहर किया जा सकता है या इसके सदस्यों की संख्या बढ़ा कर दस की जा सकती है ताकि भारत और ब्राजील को इसमें शामिल किया जा सके। सीईबीआर ने कहा कि 2029 में अमेरिका को पीछे छोड़ते हुए चीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा और अमेरिका के बाद भारत का स्थान होगा। रिपोर्ट के अनुसार, 2030 में भारत की अनुमानित जीडीपी 10,133 अरब डॉलर, अमेरिका की 32,996 अरब डॉलर और चीन की 34,338 अरब डॉलर होगी।❖


**Registration/Admission Open for Classes IV to X**

***Boy's Residential School, Co-Education for Day Scholars Only***
***A Culture Oriented English Medium School***

**(Affiliated to C.B.S.E. Delhi)**

**Website: www.ssnkumarhatti.com**

Run by:
Himachal Shiksha Samiti Shimla,
(A State unit of Vidya Bharti)

**S.S.N.**
**PUBLIC SCHOOL**
**KUMARHATTI**

**Location:** The Complex is situated on Barog bye-pass Road.
It is less than 2 km. from KUMARHATTI.

Managed by:
**Jindal Charitable Trust**
**Nabha (Panjab)**
01765-326661

**J.K. Sharma**
Principal
Ph.: 0177-266410, 94185-58030
e-mail: ssnkumarhatti@yahoo.in

# पीओजेके में बाँध बना रहा चीन

भारत के विरोध को नकारते हुए पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर में चीन एक बड़ा बांध बनाने की तैयारी कर रहा है। इसके लिए चीन और पाकिस्तान के बीच समझौता हो चुका है और बांध बनाने का काम जल्द शुरू हो जाएगा।

चीन की सरकारी पनबिजली कंपनियों में से एक चाइना थ्री गॉर्जेस कारपोरेशन 'सीटीजीएस' ने अपनी वेबसाइट में खुलासा किया है कि पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर में एक पनबिजली परियोजना को पूरा करने के लिए पाकिस्तान सरकार से समझौता किया गया है। चाइना इंटरनेशनल वाटर एंड इलेक्ट्रिक कारपोरेशन 'सीडब्लूई' और पाकिस्तान की राष्ट्रीय पारेषण और डिस्पैच कंपनी के बीच हुए समझौते के तहत पनबिजली परियोजना का काम सीटीजीएस कंपनी द्वारा किया जाएगा। 'बिल्ट, ऑपरेट और ट्रांसफर' के आधार पर पूरी होने वाली कोहाला परियोजना को कंपनी ने पाकिस्तानी पनबिजली बाजार में सबसे बड़ा निवेश बताया है। परियोजना के तहत मुजफ्फराबाद से 40 किलोमीटर दूर झेलम नदी के ऊपरी हिस्से पर एक बांध बनाकर 1100 मेगावाट बिजली का उत्पादन किया जाएगा। बिजलीघर का निर्माण बरसाला के पास होगा, जहां चार 275 मेगावाट पेल्टन टर्बाइन लगाये जाएंगे। 2.4 अरब डॉलर की लागत वाली परियोजना को सन् 2013 तक पूरा करने का लक्ष्य है। पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर को आजाद जम्मू-कश्मीर के रूप में बताने वाली कंपनी सीटीजीएस का कहना है कि परियोजना में आने वाली लागत को वसूल करने के लिए कंपनी तीस साल तक प्रति यूनिट 7.9 सेंट वसूल करेगी ।

सीटीजीएस कंपनी के मुताबिक यह परियोजना तीन हजार किलोमीटर लंबे चीन, पाकिस्तान आर्थिक गलियारे में सड़कों, रेलवे और ऊर्जा के बुनियादी ढांचे को तैयार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है साथ ही इसके जरिए पाक, चीन सीमा से जुडी अर्थव्यवस्था को और विकसित किया जा सकेगा।

# भारतीय सेना के साथ फ्रांस की सेना का साझा युद्धाभ्यास

भारत के इतिहास में पहली बार गणतंत्र दिवस के मौके पर किसी विदेशी सेना की टुकड़ी हिस्सा ले रही है। इस साल के गणतंत्र दिवस के मौके पर फ्रांसीसी सेना की टुकड़ी भी परेड में भाग ले रही है। फिलहाल फ्रांसीसी सेना की यह टुकड़ी भारतीय सेना के साथ साझा युद्धाभ्यास के लिए मौजूद है। खबरों के अनुसार फ्रांसीसी सेना की टुकड़ी भारतीय सेना के साथ परेड की तैयारी में लग चुकी है। साथ ही साथ फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद भी इस मौके पर भारत में मौजूद होंगे। फ्रांस्वा ओलांद को इस वर्ष के गणतंत्र दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया गया है। उनके इस भारतीय दौरे से दोनों देश के आपसी संबंध और अधिक मजबूत होंगे।

पिछले साल गणतंत्र दिवस के मौके पर अमेरीका के राष्ट्रपति बराक ओबामा मुख्य अतिथि के तौर मौजूद थे । हाल ही में फ्रांस और भारत में आतंकी हमले हुए हैं, और दोनों ही आतंकवाद के मुद्दे पर एक साथ खड़े हैं। भारत द्वारा रॉफेल लड़ाकू विमान की खरीद प्रकिया पर भी इसी दौरान अंतिम मोहर भी लग सकती है। ❖

*With best Compliment From:*

**Saraswati Vidya Mandir**

**Sr. Sec. School Bashing, Kullu**

**Run By: (Himachal Shiksha Samiti)**

**Admission are open for the Session 2016-17**

**classes Nursery to 10+2**

**Ph.: 01902-230003, Mob.: 94180-03951**

**E-mail: svmbkullu@gmail.com**

# देव व देवलू

ऊँची पहाड़ी से
उतर रहा,
सघन देवदार के
जंगल से गुजर रहा,
देव संग देवलुओं का एक
दल
दूर से हो
रहा आभास,
देव संग
देवलुओं का जत्था
आ रहा है पास,
बज उठे हैं
ढोल-नगारे,
छैणी-रसिंगा
लगते प्यारे,
सबसे आगे जो
चल रहा देवलू,
कंधो पर है देव ध्वज
देवलुओं संग देव उठाए,
द्वितीय क्रम पर
देवलू जो आ रहा,
वाद्य यंत्र देवता का
क्या खूब बजाए,
एक देवलू है थामे
देव छत्र,
राहगीरों के श्रद्धावश
झुक रहे हैं मस्तक,
एक के हाथ में है
सुलगते धूप का कटोरा,
सुंगधित होता आ रहा
है जिससे
मार्ग पूरा,
झूमते आ रहे हैं
देवरथ उठा,
देवलू चार,
दिव्य पावन
देवप्रतिमा है
जिसमें सवार,
अतिसुंदर है
देवरथ आर्कषक,
कृत-कृत हुए
झलक पाकर
श्रद्धालु, दर्शक
जो भी सच्चे मन से
शीश नवा रहा है,
देवता आशीष देने को
उस ओर
झुका जा रहा है,
गूर प्रसाद में
फूल, मिट्ठी खीलें
छे रहा है,
ठीक उनके पीछे
बीस-पच्चीस
देवलुओं का दल आ रहा
है,
श्रद्धालुओं के मन को
अति
लुभा रहा है,
देव संग देवलुओं का
एक जत्था
पहाड़ी से नीचे
आ रहा है।

मनोज कुमार शिव,
नम्होल, बिलासपुर

# वो दूर के रिश्ते

ये रिश्ते,
कुछ हँसते, कुछ रोते,
कुछ रिसते कुछ खिझते,
पर कहलाते हैं ये रिश्ते
रिश्ते खून के, कुछ पानी के
अन्दर तक तड़पाते, भींद ही जाते मन, मर्यादा
रु।धे कंठ से, भरी आँख से
कब निभ जाते,
कब छिप जाते ये नए-पुराने
अपने पराये
दूर-पास और घृणा-प्यार
के, उतार-चढ़ाव के कंटीले
से, कभी मखमली से ये रिश्ते।
रंग-बिरंगे, ठंडे-गरम, कड़वे-मीठे
सबक सिखाते, अपने खून के
अपने रिश्ते,
भरी ठंड में, भरी आँख में,
भर बाहों में, गले लगाकर
गर्माहट दे, पोंछ आँख को,
हंसी मुख पर ले आते
ये दूर के रिश्ते।
कितनी गलत हो जाती दुनिया
इन्हें पराया कह जाती है, नहीं-नहीं
ये ही तो अपने, सिर्फ दूर के
कहलाने वाले, अपने रिश्ते।

❖❖❖

शबनम शर्मा, पांवटा साहिब

## दशम सोपानम् संस्कृतं वदाम

**वार्तालापः ( समय विषयः )**

1. ***कः समयः?*** क्या समय हुआ है?
2. ***सपाद-चतुर्वादनम्।*** सवा चार बजे हैं।
3. ***दश-अधिक-पञ्च-वादने गन्तव्यम् अस्ति।***
   पांच बजकर दस मिनट पर जाना है।
4. ***सार्द्ध- पञ्च वादने अन्तिमं यानम् अस्ति।***
   साढ़े पांच बजे अन्तिम गाड़ी है।
5. ***ओह! प्रातः पादोन सप्त वादने घटी स्थगिता।***
   ओह! प्रातः पौने सात बजे घड़ी रूक गई।
6. ***प्रातः अहं प्रतिदिनं संस्कृते समाचारान् श्रृणोमि।***
   मैं प्रातः प्रतिदिन संस्कृत में समाचार सुनती हूँ।
7. ***अरे! आकाशवाणी-द्वारा संस्कृते समाचाराः कदा आगच्छन्ति?***
   अरे! रेडियो में संस्कृत में समाचार कब आते हैं?
8. ***न जानाति, प्रातः पञ्चकलान्यून-सप्तवादन-समये।***
   नहीं जानते, प्रातः सात बजने में पांच मिनट कम होने पर।
9. ***श्रुतं, दूरदर्शनेऽपि संस्कृते समाचाराः दर्शयन्ति?***
   सुनो, दूरदर्शन पर भी संस्कृत में समाचार दिखाये जाते हैं।
10. ***सत्यं श्रुतम्, प्रतिदिने प्रातः दशवादन-समये।***
    सही सुना- प्रतिदिन प्रातः दस बजने पर।

**शब्द कोषः ( गृह वस्तु वर्ग : 11 )**

| | | | |
|---|---|---|---|
| कूपी | बोतल | व्यजनम् | पंखा |
| पिञ्ज | स्विच | गोलदीपः | बल्ब |
| सम्मार्जनी | झाड़ू | दण्डदीपः | ट्यूबलाईट |
| कर्त्तरी | कैंची | कटः | चटाई |
| स्यूतः | थैला | आस्तरणम् | दरी |
| सिक्थ वर्त्तिका | मोमबत्ती | यवनिका | पर्दा |

***व्याकरणम् ( कारक परिचयः )***

पद और क्रिया के बीच में जो सीधा सम्बन्ध होता है उसे कारक कहते हैं। अर्थात् क्रिया की परिपूर्णता के लिये जो शब्द प्रयोग किये जाते हैं उन्हें कारकों से मुक्त माना जाता है। जैसे रमेश। विद्यालये बालकाय हस्तेण पुस्तकालय ग्रन्थं ददाति। रमेश विद्यालय में बालक के लिये हाथ के द्वारा पुस्तकालय से ग्रन्थ को देता है। (संक्षेप के लिये बड़ा वाक्य बनाया है, छोटे वाक्य बनाये जा सकते हैं) ऐसे किसी भी वाक्य में दान आदि (ददाति) किसी भी क्रिया के लिए जिन-जिन पदों का प्रयोग हुआ है ( रमेश विद्यालये, बालकाय, हस्तेण, पुस्कालयात, ग्रन्थं) उन्हें कारक मुक्त माना जाता है। इस प्रकार क्रिया की पूर्णता के लिये छः प्रकार के पदों का प्रयोग होता है। अतः कारक छः प्रकार के होते हैं। ❖


प्रवेश एवं पंजीकरण सूचना

**अनिला महाजन सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक आवासीय विद्यालय**

**मनाली स्थित रांगड़ी**

**हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड धर्मशाला से सम्बद्धता प्राप्त**

**प्रवेश एवं पंजीकरण सूचना हेतुः-**

- नर्सरी से आठवीं कक्षा के लिए पंजीकरण एवं प्रवेश तिथि 27 जनवरी 2016
- नवम् से 10+1 कक्षा के लिए पंजीकरण एवं प्रवेश तिथि 1 अप्रैल से 10 अप्रैल 2016 तक
- विद्यालय में सभी कक्षाओं में प्रवेश केवल प्रवेश परीक्षा के आधार पर दिया जाएगा।
- छात्रावास में प्रवेश हेतू पंजीकरण कक्षा चतुर्थ से 10+2 तक

- *Virtual Class Room*
- *Smart Classes*
- *C.C.T.V. Camera*
- *Wi-Fi Campus*

**पंजीकरण प्रारम्भ**

**विद्यालय में विशेष सुविधाएँ उपलब्ध**

**AIEEE/IIT/JEE/PMT की तैयारी के लिए ABLES Academy के द्वारा राजस्थान से Satellite के माध्यम से तैयारी करवाई जाती है।**

**प्रवेश एवं पंजीकरण से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-**

**प्रधानाचार्यः-94180-07551, उपप्रधानाचार्यः-98171-42907**

**कार्यालयः-01902-253777**

www.svmmanali.org, www.shikshasamiti.org E-mail: anilasvmmanali@rocketmail.com

# कैसे करें दांतों तथा मसूड़ों की उचित सुरक्षा

दांत केवल सौंदर्य बढ़ाने, दिखाने या फिर किसी को चिढ़ाने मात्र के लिए नहीं होते। ये केवल चेहरे की 'शेप' को ही नहीं संभालते बल्कि पाचन प्रक्रिया इन्हीं पर निर्भर रहती है। दांत और मसूड़े ठीक होंगे तो चबाना व पचाना सरल हो जाएगा।

* यदि खूब चबाया हुआ भोजन पेट में नहीं उतरेगा तो आंतों पर अधिक भार पड़ेगा। भोजन में लार कम आने से यह पचता नहीं है।
* कच्चा पनीर चबाने से दांतों में फंसे अनाज व मीठे को निकालना आसान हो जाता है। पनीर भी न फंसा रहे, इसलिए अच्छी तरह कुल्ला करें।

* आंवले के छोटे टुकड़े मुंह में रखें, चूसें। फिर कुल्ला करें। इस प्रकार दांत, मसूड़े, मजबूत होंगे तथा विटामिन 'सी' की कमी पूरी होगी।
* नीबू का प्रयोग करने के बाद छिलके से दांत-मसूड़े साफ करें।
* पुदीना लाभकारी रहता है। इसका रस व चटनी पायरिया दूर करते हैं।
* दही से खनिज तथा विटामिन की कमी पूरी होती है। जरूर सेवन करें।
* फिटकरी के पानी से कुल्ला करना बहुत अच्छा रहता है।
* खाद्य पदार्थ दांतों व मसूड़ों में न रहें, इसीलिए दांत साफ रखें। लौंग का तेल केवल दर्द करते दांत पर लगाएं, बाकी पर न लगे।
* शलजम को कच्चा खाना, मूली तथा उसके पत्ते चबाना अच्छा रहता है।
* कच्चा प्याज खाने से दांतों को मजबूती मिलती है।
* दांतों व मसूड़ों की कीटाणुओं से रक्षा करने के लिए चेरी खाएं।

### घरेलू उपचारों द्वारा बच्चे को बचाएं सर्दी से

अधिक सर्दी होने के कारण सभी बीमार पड़ सकते हैं, किंतु बच्चों पर सर्दी का असर बहुत जल्दी होने लगता है। उन्हें सर्दी, जुकाम, खांसी आदि की तकलीफें हो जाती हैं। रसोई में उपलब्ध कुछ सामान (मसालों आदि) से आप बच्चों को ठीक कर सकते हैं। कुछ उपचार देखिए-

* नींबू का रस व शहद समान मात्रा में लें, इन्हें मिलाकर बच्चे को चटाएं। खांसी नहीं रहेगी।
* एक नींबू पर गीली मिट्टी लपेटें। आग में भूनें, अब इस नीबू का रस निकालें। इस पीने से जुकाम से आराम मिलता है।
* सर्दी जुकाम का प्रभाव खत्म करने के लिए तुलसी का सहारा लें। तुलसी के रस में शहद मिलाएं। इसे चटाएं। इससे सूखी खांसी, गले की खराबी, कफ वाली खांसी, सब ठीक हो जाती है।
* मुलहठी, बादाम की गिरी, बिना बीज का मुनक्का तीनों को पीसें। छोटी गोलियां बनाएं। एक-एक गोली चूसे। यह आराम देगी।

*साभार: पथिक संदेश*

**SHIVALIK HOSPITAL**
**Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)**
**Mob.: 98059-33644**

**Dr. Akshay Sharma**
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

**Dr. Anupma Sharma**
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
**SKIN SPECIALIST**
Regd. PMC-28190

**Facilities Available:** General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

# फोर्ब्स की सूची में चमके भारतीय

फोर्ब्स की 30 साल से कम उम्र के सफल व्यक्तियों की वार्षिक लिस्ट में 45 भारतीय और भारतीय मूल के लोग शामिल हैं। इस लिस्ट में उन लोगों के नाम शामिल हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में बिलकुल नई परिस्थितियां तैयार की हैं। फोर्ब्स की '30 अंडर 30' की लिस्ट में 600 पुरूष-महिलाएं शामिल हैं, जो अमरीका के सबसे महत्वपूर्ण युवा उद्यमी, रचनात्मक नेतृत्व वाले और चमकते सितारे हैं। ये उद्यमी उपभोक्ता प्रौद्योगिकी, शिक्षा, मीडिया, विनिर्माण और उद्योग, कानून और नीति, सामाजिक उद्यमी, विज्ञान और कला क्षेत्रों से जुड़े हैं। अगर 30 से कम उम्र में आप दुनिया बदलना चाहते हैं तो अब फायदे की स्थिति में हैं। कंज्यूमर टेक्नोलॉजी में 22 साल के रितेश अग्रवाल हैं, जो ओयो रूम्स के संस्थापक और सीईओ हैं। फोर्ब्स ने कहा कि ऐसे देश में जहां कम किराए वाली होटल की उपलब्धता कम है, ओयो ने पूरे भारत के 100 शहरों में 2200 छोटे होटलों का नेटवर्क तैयार किया है। इसमें 25 साल की करिश्मा शाह का भी नाम है जो एल्फाबेट के गूगल एक्स से जुड़ी हैं। हॉलीवुड और मनोरंजन क्षेत्र से 27 साल की कनाडाई लिली सिंह का नाम है जो लेखक-हास्य कलाकार हैं और नए दौर के उन सितारों में शामिल हैं, जिन्होंने यू-ट्यूब के जरिए अपने प्रशंसक बनाए। भारतीय मूल के अन्य सफल लोगों में नीला दास शामिल हैं, जो सिटी ग्रुप की उपाध्यक्ष हैं। 29 साल की दिव्य नेट्टिमी वाइकिंग ग्लोबल इन्वेस्टर में निवेशक विश्लेषक हैं। इस सूची में विकास पटेल का भी नाम है जो हेज फंड मिलेनियम मैनेजमेंट में वरिष्ठ विश्लेषक हैं। ❖

## बुर्का पहना तो होगा 6.5 लाख जुर्माना

स्विटजरलैंड में अब मुस्लिम महिलाएं सार्वजनिक स्थान पर बुर्का नहीं पहन सकेंगी। यहां के तिसिनो प्रांत में नए नियम के तहत इस पर पाबंदी लगा दी गई है। नियम न मानने वाले पर 6,500 पाउंड यानी साढ़े 6 लाख रूपए का जुर्माना लगाया जा सकता है। ये पाबंदी दुकानों, रेस्टोरेंट और सार्वजनिक भवनों के लिए है। यह फैसला आतंकी हमले के खतरे के मद्देनजर हुआ है। पाबंदी को लेकर सितंबर 2013 में जनमत संग्रह कराया गया था, जिसे राज्य सरकार ने मंजूरी दे दी है। साउदर्न स्विस स्टेट की सरकार ने रिफरेंडम को स्विस संसद के उस फैसले के बाद मंजूरी दी, जिसमें कहा गया कि पाबंदी से देश के संघीय कानूनों का उल्लंघन नहीं होगा। देश में सांसद ने जिस नियम के लिए वोट किया है, उसके तहत स्विटजरलैंड में रह रही 40 हजार मुस्लिम महिलाएं और आने वाली पर्यटक महिलाएं सिर से पैर तक शरीर को ढकने वाला बुर्का पहन सकेंगी, लेकिन नकाब या मास्क से चेहरा छिपाने पर पाबंदी होगी। इस प्रस्ताव को पेश करने वाले जियार्जियो गिरिंघेली ने कहा कि इस जनमत संग्रह के नतीजे से देश के इस्लामिक कट्टरपंथियों के लिए एक संदेश है। उन्होंने कहा कि जो लोग समानता चाहते हैं, वे अपने धर्म को अलग रख इसके फैसले का स्वागत करेंगे, लेकिन जो लोग धार्मिक नियमों के आधार पर समानांतर समाज बनाना चाहते हैं, उनके लिए इसे स्वीकार करना मुश्किल होगा। *साभार: बिरसा हुंकार*


**INDIAN ACUPRESSURE & HEALTH CARE CENTRE**

**( हिमाचल का एकमात्र संस्थान )**

| Dr. Nidhi Bala | Dr. Shiv Kumar |
|---|---|
| M.D. ACU Rattna | M.D. ACU Rattna |
| M. 98175-95421 | M. 98177-80222 |

**सर्वाइकल, ब्लड प्रेशर, जोड़ों के दर्द, डिस्क प्रोब्लम, माइग्रेन, गठिया, घुटनों का दर्द, यूरिक एसिड, अधरंग, त्वचा रोग आदि बीमारियों का एक्युप्रेशर और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है।**

**आगामी कैम्प**

**दूरभाष पर सम्पर्क करें।**

**ट्रेनिंग, ट्रीटमेंट और कैम्प के लिये संपर्क करें:**

**Regular Clinic:**
**C/o K.K. Sharma Vivek Nagar**
**Pingah Road, Una (H.P.)**

# जो हुआ, अच्छा हुआ

संसद का शीत सत्र समाप्त हो गया। यह सत्र याद किया जाएगा तो इसलिए क्योंकि विधायी तौर पर जो करना तय था उसे छोड़कर राजनीतिक तौर पर विपक्ष द्वारा जो किया जाना था वह सब इस दौरान किया गया। तथ्य यह है कि इस हंगामे में सत्र का 64 प्रतिशत समय गैर-विधायी कार्यों की भेंट चढ़ गया। खैर, जो हुआ, अच्छा ही हुआ। अच्छा इसलिए कि संसद के इस घटनाक्रम ने पहली बार इन सवालों पर विचार करने के लिए बड़े नेताओं, विशेषज्ञों और विचारकों को ही नहीं आम जनता तक को बाध्य कर दिया कि आखिर इस देश में लोकतंत्र का अर्थ क्या है? इस सत्र के हश्र ने सुभीते की लामबंदी और वंशवादी राजनीति के दुष्चक्र को आम लोगों के सामने उघाड़कर स्पष्ट कर दिया। देश की सबसे बड़ी पंचायत में सांसदों को चीखते-चिल्लाते, हंगामा मचाते देखना दु:खद है। इससे भी दु:खद उन मुद्दों का विश्लेषण है जिन्हें आगे करते हुए सदन की कार्यवाही में अड़चन डाली गई। हेराल्ड मामला न्यायालय में है। सम्मन आरोपियों के लिए न्यायालय द्वारा जारी हुआ। इसे कोई प्रतिष्ठा का प्रश्न कैसे बना सकता है?

असहिष्णुता को मुद्दे की तरह गर्माने वाले सदन में इस बहस से कतराते या सदन को बाधित करते कैसे दिख सकते हैं! और असम में राहुल गांधी को मंदिर में प्रवेश न करने देने की बात.... वह तो कोरी अफवाह ही थी। कोई शक नहीं कि सदन पहली बार ठप नहीं हुए हैं। अतीत में भी ऐसी घटनाएं घटी हैं। लेकिन उस इतिहास में और इस वर्तमान में जमीन-आसमान का फर्क है। यह नहीं भूलना चाहिए कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के दौर में जब-जब सदन का कामकाज बाधित हुआ उसका आधार अकथनीय भ्रष्टाचार के संगीन मामले रहे। तब 2जी जैसे घोटालों को सदन में नकारने वालों के होंठ अब नीलामियों के बाद आंकड़ों को रकम में बदलते देख सिल गए हैं। सो, यह कहना गलत नहीं कि तब जनता को संसद का यह गतिरोध भ्रष्टाचार विरोधी राष्ट्रव्यापी आंदोलन का भाग लगता था। घपले-घोटालों की दिन पर दिन लंबी होती सूची को ढोने वालों की इच्छानुसार तब सदन चलता, या नहीं चलता-देश को पता था कि इनमें से उसका हित किस बात में है। यह तर्क किसी को चुभता हो तो पिछले आम चुनाव के नतीजे देख लेने चाहिए। लोकसभा चुनाव परिणामों ने साबित किया कि जनता अपने हित को बखूबी पहचानती थी।

और राज्यसभा? संसद का जो उच्च सदन जनता की भावनाओं को, उसकी ऊर्जा को मार्गदर्शन देने का अभिप्राय रखता हो, जिस सदन से कानूनों को अंतिम रूप देने से पहले उनके बारीक विश्लेषण और विशेषज्ञता पूर्ण राय की कल्पना रही हो क्या अब अपनी भूमिका से न्याय कर पा रहा है? बीजू जनता दल से लोकसभा सांसद बैजयंत जे पांडा ने जब अपने एक लेख में राज्यसभा की शक्तियां सीमित करने की पैरवी की तो बात विशेषाधिकार हनन तक जा पहुंची। उच्च सदन के निर्दलीय सदस्य राजीव चन्द्रशेखर कहते हैं कि मानूसन सत्र से शीत सत्र तक दिल्ली में सिर्फ मौसम बदला है और कांग्रेस सुधारों में अड़चन पैदा करने, विधायी कार्यों को पंगु बनाने की भूमिका से बाहर नहीं निकल पाई है। तर्क अपनी जगह, किन्तु यह स्थिति अपने आप में विचित्र है। एक सजग, सतर्क लोकतंत्र में सदनों से निश्चित अपेक्षाएं रहती हैं, रहनी भी चाहिए। किसी सदन के शक्ति-प्रदर्शन का 'मैदान' या राजनीतिक कड़वाहट का मंच बनने की उम्मीद नहीं की जाती।

टौपनिवेशिक शासन से निकलने और 'वेस्टमिंस्टर मॉडल' को अपनाने के बावजूद भारतीय संसद की अपनी छवि है। हमने यदि अपने उच्च सदन की शक्तियों को ब्रिटेन की तर्ज पर इतना शिथिल नहीं किया कि उसकी भूमिका विधेयकों को अंतिम पारित करने में निर्णायक न रहे तो इसके अपने कारण हैं। भारतीय लोकतंत्र में दोनों सदनों की साझी सोच के साथ आगे बढ़ने के भाव का बने रहना जरूरी है। क्या महत्वपूर्ण विधायी कार्यों का रास्ता, इस देश के विकास का पहिया, किसी राजनीतिक दल के हित के चलते रोका जा सकता है? भ्रष्टाचार-मुक्त भारत और हंगामा-मुक्त संसद किसे नहीं चाहिए? इतने सारे, इतने तीखे सवालों के साथ इस सत्र के समापन ने देश की आंखें खोल दी हैं। लटके हुए काम भले ही अगली बार हो जाएं, इस बार भी यह एक बड़ा काम तो हुआ ही है। इसलिए, जो हुआ, अच्छा हुआ। *साभार: पाञ्चजन्य*

# राष्ट्र समर्पित इतिहास पुरूषः ठाकुर राम सिंह

– चेतराम गर्ग, सह सम्पादक, इतिहास दिवाकर

आदिकाल में भारतीय सभ्यता में समाज के उत्थान और सुखद भविष्य के निर्माण में हमारे ऋषि, मुनियों एवं सेवा की भावना लिए महापुरूषों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मुनिवृति धारण करने वाले कुशल संगठक और युगपुरूष स्वर्गीय ठाकुर रामसिंह जी भी उनमें से एक हैं। स्वर्गीय ठाकुर राम सिंह जी का जन्म एक साधारण किसान परिवार में कलियुगाब्द 5016, विक्रमी संवत् 1971 सौर मास फाल्गुन प्रविष्ठे 4, तदनुसार 16 फरवरी, 1915 को हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले के झण्डवीं गांव में हुआ था। उनके पिता श्री भाग सिंह व माता श्रीमती नियातु देवी थी। मुलतः ये चांगरा राणा थे। कांगड़ा जिले के पालमपुर क्षेत्र को चंगर कहा जाता है। कई पीढ़ी पूर्व ठाकुर जी के पूर्वज वहां से झण्डवीं गांव में आकर बस गए थे। उनके दादा मेहर धन्ना सिंह समाज के एक प्रतिष्ठित व प्रभावशाली व्यक्ति थे। ठाकुर राम सिंह जीवन के प्रारम्भिक काल से ही दृढ़ इच्छा शक्ति, साहस, शौर्य व प्रतिभा के धनी थे। किसी भी चुनौती से उन्हें हार मानना स्वीकार नहीं था आप की प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय पाठशाला भोरंज में हुई। 5 किलोमीटर की दूरी पर है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए ठाकुर जी लाहौर चले गए। लाहौर के प्रसिद्ध एफ.सी. कॉलेज में ठाकुर जी ने प्रवेश लिया। इनकी एम.ए. इतिहास तक की पढ़ाई इसी कॉलेज में हुई। 1942 में आप ने प्रथम श्रेणी में एम. ए. पास कर सब को आश्चर्यचकित कर दिया। आश्चर्य का मुख्य कारण था ठाकुर जी की हॉकी खेलने की दिवानगी। वे एक सधे हुए हॉकी के खिलाड़ी थे। उनका पढ़ाई से अधिक समय खेलने में निकल जाता था और साथ ही 1941 में आप का संघ की शाखा में भी जाना प्रारम्भ हो गया था। इस कारण पढ़ाई के लिए थोड़ा ही समय बचता था। थोड़े समय में भी अधिक समझ लेना ठाकुर जी की अतुल प्रतिभा थी। वे कई बार बताते थे कि पढ़ने की एक पद्धति होती है। यह पद्धति उन्हें 10वीं कक्षा में पढ़ाने वाले एक अध्यापक ने सिखाई थी। उस अध्यापक का कहना था कि विषय वस्तु को पढ़ने के बाद उस विषय का मनन कर लो। रात को सोने से पूर्व पुनः एक बार स्मरण कर लो। यदि भूल गए हो तो एक बार पुनः विषय को देख लो तो कभी भी स्मरण किया हुआ विषय भूलता नहीं है। यह पद्धति ठाकुर जी के साथ अंतिम समय तक रही। इतिहास विषय में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद वहां के प्राचार्य ने ठाकुर जी को इसी कॉलेज में इतिहास के प्राध्यापक के तौर पर नौकरी करने का आग्रह किया। ठाकुर जी ने यह आग्रह स्वीकार करने में असमर्थता व्यक्त की तथा अपना जीवन ध्येय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य के रूप में निश्चित कर लिया।

**इतिहास कार्य के लिए ठाकुर जी का चयन**

इतिहास ठाकुर जी का विषय रहा है। ठाकुर जी यह भी बताते रहते थे कि एम.ए. में निर्धारित पाठ्यक्रम में जो इतिहास लगा था, वह तो पढ़ाया ही जाता था परन्तु वहां ऐसे योग्य प्राध्यापक भी थे जो भारत के वास्तविक इतिहास की जानकारी प्रदान करते थे। वस्तुतः वे भारत के वैभवशाली इतिहास का ज्ञान करवाते रहते थे जिसका श्रेय इन्हीं को जाता है।

ठाकुर राम सिंह जी ने विकृत इतिहास के जो प्रमाण इतिहासकारों, चिन्तकों एवं समाज के समक्ष रखे उनके कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

- यूनान आक्रान्ता सिकन्दर को विश्वविजेता और महान बताने वाले इतिहासकार सिकन्दर के द्विगर्त क्षेत्र से आगे न बढ़ने और डोगरा वीरों द्वारा मारे जाने पर मौन हैं।
- इस्लाम के गाजी सुल्तान मुहम्मद गजनवी के साथ आए इतिहासकार अल्बरूनी भारत का इतिहास जानने के लिए पर्याप्त सामग्री साथ ले गया। वही

इतिहासकार जाते-जाते यह कहता है कि भारत के लोगों को इतिहास लिखने की कला नहीं आती। इतिहासकार अल्बेरूनी की मंशा पर आज भी मौन हैं।

- नालन्दा और विक्रमशिला हिन्दू विश्वविद्यालयों को जलाने वाले मुहम्मद बख्त्यार खिलजी को इतिहासकार गाजी और योद्धा चित्रित करते हैं, परन्तु उसका अन्त करने वाले भारतीय योद्धाओं पर इतिहासकार मौन हैं।
- राजस्थान का इतिहास बताता है कि मेवाड़ के सिसोदियों और जोधपुर के राठौड़ों ने मिलकर जहांगीर को युद्ध में 17 बार हराया था। इतिहासकार इस पर या तो मौन साधे हुए हैं या फिर इन घटनाओं को अधिमान देना ही नहीं चाहते।
- भारत के इतिहास में 40 चक्रवर्ती सम्राट हुए हैं। चक्रवर्ती सम्राट का जब राज्याभिषेक होता था तो वह सप्तद्वीपेश्वर की शपथ लेता था। रामचन्द्र जी भी चक्रवर्ती सम्राट थे। अंतिम चक्रवर्ती सम्राट युधिष्ठर थे। इन पर भी इतिहासकार मौन हैं।
- मराठा योद्धा शिवाजी महाराज ने मुगल साम्राज्य के विस्तार को रोकने के लिए 255 युद्ध लड़े। वह न तो किसी युद्ध में हारे और न ही जख्मी हुए। इतिहासकार ऐसे योद्धा को इतिहास में चित्रित करने से कतराते हैं।
- गुरू गोविन्द सिंह, राणा प्रताप, छत्रसाल, दुर्गादास राठौर और असम के लाचित बड़फुकन जैसे योद्धाओं की शौर्य गाथाओं को इतिहास में स्थान न देकर इतिहासकार मुस्लमानों और अंग्रेजों के शौर्य का गुणगान करते क्यों दिखाई देते हैं?
- पुरातात्विक खोजों, डी.एन.ए. साक्ष्यों, वैदिक साक्ष्यों, ऐतिहासिक प्रमाणों एवं वैज्ञानिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो गया है कि आर्य भारत के मूल निवासी हैं। मानव की प्रथम उत्पत्ति सुमेरूपर्वत पर हुई। सभी जातियों, सभी धर्मों, सभी शास्त्रों, सब राष्ट्रों और ज्ञान-विज्ञान का उदय भारत में हुआ। इस सन्दर्भ में समस्त साक्ष्य भारत में विद्यमान हैं। इतिहासकार उन पर आज भी मौन हैं।

इसलिए यह धारणा निराधार है कि भारत का अपना कोई प्राचीन इतिहास नहीं और न ही भारत के लोगों को इतिहास लिखना आता है। ठाकुर जी ने भारतीय सभ्यता में इतिहास लेखन के वे प्रमाण समक्ष रख दिए हैं जो समय आने पर अवश्यं सर्व-स्वीकार्य होंगे, क्योंकि सत्य को दबाया नहीं जा सकता।❖


**बवासीर, भगन्दर, फिशरज़**
**एनलपोलिप्स, पाईलोनाइडल साइनस**
**आदि गुदा रोगों के क्षार-सूत्र (आयुर्वेद)**
**पद्धति से बिना चीर-फाड़ के ऑप्रेशन**

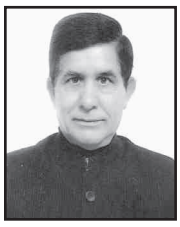



Dr. Hem Raj Sharma
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

SPECIALIST IN ANO-RECTAL DISORDERS

Facilities : Emergency 24 Hours, Indoor Facility, Well Equipted Operation Theatre, Computerized Clinical Laboratory, ECG, Pregnancy & Gynaecological Check-up,Immunisation for children

**जगत अस्पताल एवं क्षार-सूत्र सैंटर**

**गवर्नमैंट कॉलेज के नजदीक, नंगल रोड, ऊना-174303 (हि.प्र.)**
**Phone : 94184-88660, 94592-88323**


**उत्तरः-**

*1.ज्योतिका दत्ता, 2. 100, 3. जोगेन्द्र नगर, 4. हेमराज, 5. प्रणव धनावड़े, 6. सी.एन.आर.राव, 7. कोवर्ती, 8. उत्तर कोरिया, 9. 14 वर्ष, 20. 41।*

# विद्या की देवी भगवती सरस्वती

सरस्वती स्तुतिमहती न हीयताम्।

सम्पूर्ण जगत् की कारणभूत आद्याशक्ति परमेश्वरी की अभिव्यक्ति तीन स्वरूपों में होती है- महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती। इनकी मूल प्रकृति महालक्ष्मी ही हैं। वे ही विशुद्ध सत्वगुण के अंश से महासरस्वती के रूप में प्रकट होती हैं। इनका चन्द्रमा के समान गौर वर्ण है। इनके हाथों में अक्षमाला, अङ्कुश, वीणा तथा पुस्तक शोभा पाती है। महाविद्या, महावाणी, भारती, वाक्, सरस्वती, आर्या, ब्राह्मी, कामधेनु, वेदगर्भा और धीश्वरी (बुद्धि की स्वामिनी)- ये इनके नाम हैं। ये वाणी और विद्या की अधिष्ठात्री देवी मानी जाती हैं। ऋग्वेद में वाग्देवी का नाम सरस्वती बताया गया है। इनके तीन स्थान हैं- स्वर्ग, पृथ्वी और अन्तरिक्ष। स्वर्ग की वाग्देवी का नाम भारती, पृथ्वी के वाग्देवता का नाम इला और अन्तरिक्ष वासिनी वाग्देवी का नाम सरस्वती है। तन्त्रशास्त्र में प्रसिद्ध तारा देवी का नाम सरस्वती है। तन्त्रोक्त नील सरस्वती की पीठ शक्तियों में भी सरस्वती का नाम आया है। तारिणी देवी की एक मूर्ति का नाम भी सरस्वती है। सरस्वती देवी सम्पूर्ण संशयों का उच्छेद करने वाली तथा बोध स्वरूपिणी हैं। इनकी उपासना से सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं। ये संगीत-शास्त्र की भी अधिष्ठात्री देवी हैं। ताल, स्वर, लय, राग-रागिनी आदि का प्रादुर्भाव भी इन्हीं से हुआ है। सात प्रकार के स्वरों द्वारा इनका स्मरण किया जाता है, इसलिए ये स्वरात्मिका कहलाती हैं। सप्तविध स्वरों का ज्ञान प्रदान करने के कारण इनका नाम सरस्वती है। 'देवी भागवत' में लिखा है, सरस्वती देवी भगवान् श्रीकृष्ण की जिह्वा के अग्रभाग से प्रकट हुई हैं। श्रीकृष्ण ने उन्हें भगवान् नारायण को समर्पित किया। श्रीकृष्ण ने ही संसार में सरस्वती की पूजा प्रचारित की। पूर्वकाल में भगवान् नारायण की तीन पत्नियां थीं- लक्ष्मी, गंगा और सरस्वती। तीनों ही बड़े प्रेम से रहतीं और अनन्य भाव से भगवान् का पूजन किया करती थीं। एक दिन भगवान् की ही इच्छा से ऐसी घटना हो गई जिससे लक्ष्मी, गंगा और सरस्वती को भगवान् के चरणों से कुछ काल के लिए दूर हट जाना पड़ा। भगवान् जब अन्त:पुर में पधारे, उस समय तीनों देवियां एक ही स्थान पर बैठी हुई परस्पर प्रेमालाप कर रही थीं, भगवान् को आया देख तीनों उनके स्वागत के लिए खड़ी हो गईं। उस समय गंगा ने विशेष प्रेमपूर्ण दृष्टि से भगवान् की ओर देखा। भगवान् ने भी उनकी दृष्टि का उत्तर वैसी ही स्नेहपूर्ण दृष्टि से हंसकर दिया, फिर वे किसी आवश्यकता वश अन्त:पुर से बाहर निकल गए। तब देवी सरस्वती ने गंगा के उस बर्ताव को अनुचित बताकर उनके प्रति आक्षेप किया। गंगा ने भी कठोर शब्दों में उनका प्रतिवाद किया। उनका विवाद बढ़ता देख लक्ष्मी जी ने दोनों को शांत करने की चेष्टा की। सरस्वती ने लक्ष्मी के इस बर्ताव को गंगा जी के प्रति पक्षपात माना और उन्हें शाप दे दिया, 'तुम वृक्ष और नदी के रूप में परिणत हो जाओगी।' यह देख गंगा ने भी सरस्वती को शाप दिया 'तुम भी नदी हो जाओगी।' यही शाप सरस्वती की ओर से गंगा को भी मिला। इतने ही में भगवान् पुन: अन्त:पुर में लौट आए। अब देवियां प्रकृतिस्थ हो चुकी थीं। उन्हें अपनी भूल मालूम हुई तथा भगवान् के चरणों से विलग होने के भय से दु:खी होकर रोने लगीं। इस प्रकार उनका सब हाल सुनकर भगवान् को खेद हुआ। उनकी आकुलता देखकर वे दया से द्रवीभूत हो उठे। उन्होंने कहा- 'तुम सब लोग एक अंश से ही नदी होओगी अन्य अंशों से तुम्हारा निवास मेरे ही पास रहेगा। सरस्वती एक अंश से नदी होंगी। एक अंश से इन्हें ब्रह्मा जी की सेवा में रहना पड़ेगा तथा शेष अंशों से ये मेरे ही पास निवास करेंगी। कलियुग के पांच हजार वर्ष बीतने के बाद तुम सबके शाप का उद्धार हो जाएगा। इसके अनुसार सरस्वती भारत भूमि में अंशत: अवतीर्ण होकर भारती कहलाईं। उसी शरीर से ब्रह्मा जी को प्रियतमा पत्नी होने के कारण उनकी 'ब्राह्मी' नाम से प्रसिद्धि हुई। किसी-किसी कल्प में सरस्वती ब्रह्मा जी की कन्या के रूप में अवतीर्ण होती हैं और आजीवन कुमारीव्रत का पालन करती हुई उनकी सेवा में रहती हैं। एक बार ब्रह्मा जी ने यह विचार किया कि इस पृथ्वी पर सभी देवताओं के तीर्थ हैं, केवल मेरा ही तीर्थ नहीं है। ऐसा सोचकर उन्होंने अपने नाम से एक तीर्थ स्थापित करने का निश्चय किया और इसी उद्देश्य से एक रत्नमयी शिला पृथ्वी पर गिराई। यह शिला चमत्कारपुर के समीप गिरी अत: ब्रह्मा जी ने उसी क्षेत्र में अपना तीर्थ स्थापित किया। एकार्णव में शयन करने वाले भगवान् विष्णु की नाभि से जो कमल निकला, जिससे ब्रह्मा जी का प्राकट्य हुआ, वह स्थान भी वही माना गया है। वही पुष्कर तीर्थ के नाम से विख्यात हुआ। पुराणों में उसकी बड़ी महिमा गाई गई है। तीर्थ स्थापित होने के बाद ब्रह्मा जी ने वहां पवित्र जलसे पूर्ण एक सरोवर बनाने का विचार किया। इसके लिए उन्होंने सरस्वती नदी का स्मरण किया। सरस्वती देवी नदी रूप में परिणत होकर भी पापीजनों के स्पर्श के भय से छिपी-छिपी पाताल में बहती थीं। ब्रह्मा जी के स्मरण करने पर वे भूतल और पूर्वोक्त शिला को भी भेदकर वहां प्रकट हुईं। उन्हें देखकर ब्रह्मा जी ने कहा- 'तुम सदा यहां मेरे समीप ही रहो मैं प्रतिदिन तुम्हारे जल में तर्पण करूंगा।❖ **साभार: कल्याण नारी अंक**

# शौर्य की साइकिल देगी एसी जैसी ठंडी हवा

चिलचिलाती धूप में अगर आपको साइकिल पर सुकून देती ठंडी हवा चेहरे पर मिले तो कैसा लगेगा। लेकिन 6वीं के स्टूडेंट शौर्य चानना ने ऐसी ही साइकिल तैयार की है, जिसे उन्होंने एसी कूलिंग साइकिल का नाम दिया है। शौर्य सेंट जोसेफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल के स्टूडेंट हैं। बीते दिनों स्टेट काउंसिल फॉर एजुकेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग में हुई साइंस एग्जीबिशन में इस साइकिल को काफी पसंद किया गया। साइकिल को ऐसी साइकिल में बदलने के लिए शौर्य चानना को छठी-आठवीं क्लास की कैटेगिरी में फर्स्ट प्राइज मिला। इस साइकिल में मामूली उपकरणों की मदद से पंखा लगाया है। जिससे एसी जैसी ठंडी हवा मिलती है। इस साइकिल को तैयार करने में मात्र 4 हजार रूपए का खर्च आया है।

**हैंडल पर लगा पंखा, कंटेनर में रखा जाता बर्फ**

साइकिल के हैंडल के लेफ्ट साइड पर बहुत ही हल्के वजन का पंखा लगा है। हैंडल के बिल्कुल बीच में नीचे की तरफ प्लास्टिक का कंटेनर लगाया गया है। इसमें 70 फीसदी आईस के साथ 30 फीसदी पानी डालते हैं। कंटेनर के ऊपर फ्लेक्सिबल इलास्टोमेरिक फोम लगाया गया है, ताकि कंटेनर में पानी बिलकुल ठंडा रहे। पानी को ऊपर धकेलने के लिए कंटेनर के अंदर ही पंप लगाया है। इस पंप को साइकिल के पीछे 12 वोल्ट की बैटरी से जोड़ा गया है, क्योंकि ये बैटरी की पंप को चलाने के लिए मदद करती है। साइकिल के अगले हिस्से में रखे गए कंटेनर से एक कॉपर क्वाइल ऊपर निकालकर पंखे के सेंटर में फोल्ड करके जोड़कर वापस नीचे कंटेनर तक पहुंचाई गई है। अब साइकिल चलाते हुए पंप और पंखा एक साथ ऑन कर दिया जाता है। नीचे कंटेनर से पानी ऊपर आकर कॉपर क्वाइल से बहना शुरू करता है और पंखे से आती गर्म हवा आगे लगे ठंडे पानी से भरे कॉपर क्वाइल से टकराने के बाद साइकिल चलाने वाले तक ठंडी होकर पहुंचती है। इस तरह तेज गमी में भी साइकिल चलाने वाले को ठंडी हवाएं राहत पहुंचाती हैं। इस प्रक्रिया से पानी भी बेकार नहीं जाता क्योंकि कंटेनर से पानी निकलकर दोबारा वापस आकर उसी चक्र में चलता रहता है। ❖


*With best*
*Compliment From:*

**Saraswati Vidya Mandir**

**Sr. Sec. School Samoli**
**(Rohru) Shimla**

**Run By: Himachal Shiksha Samiti**
**Shimla** (A Unit of Vidya Bharti)

**Admission open**

**Limited seats in every classes**
**Nursery to 10+2 Affiliated**
**to HPSBSE Dharamshala**


पृष्ठ 5 का शेष . . .

बालक-बालिकायें अर्थात छात्र-छात्राएं सामाजिक और आर्थिक भेद-भाव को भूलाकर समन्वित रूप से एक साथ ज्ञान और विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन किया करते थे। इन तपोवनों में विद्यार्थियों को विविध ज्ञान की शिक्षा प्रदान किये जाने के कारण यहीं पर तर्क-वितर्क और दर्शन की अनेकों धारणाएं विकसित हुई। सत्य की खोज, राज्य के सामयिक मामले व मुद्दे और अन्य समस्याओं के समाधान के ये प्रमुख केंन्द्र बन गए।

तपोवन में पूर्ण सुसंस्कृत और विकसित समाज का निर्माण कर प्रकृति और पर्यावरण के साथ अनुराग व स्वाभाविक स्नेह तथा हिंसक जंगली जानवरों के प्रति भी आत्मीयता मन से भरे निवास करने वाले अर्थात जंगलों में जीवन का मंगल पैदा करने वाले ऋषि-मुनियों के महान उद्देश्य तथा उच्चतम लक्ष्य ने ही भारतवर्ष में अरण्य संस्कृति को आश्रम जीवन की उत्तुंग ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया था।❖

# मदरसे में राष्ट्रगान गाने पर मौलानाओं ने शिक्षक को पीटा

पश्चिम बंगाल के एक मदरसा शिक्षक काजी मासूम अख्तर को बच्चों को राष्ट्रगान सिखाना भारी पड़ गया। जानकारी के अनुसार गणतंत्र दिवस की तैयारी को लेकर मदरसा शिक्षक बच्चों को राष्ट्रगान सिखा रहा था। जिसकी जानकारी मिलने पर क्षेत्र के कुछ मौलवियों और उनके सहयोगियों ने इसे इस्लाम विरोधी बताकर अख्तर पर हमला कर दिया। मदरसे में राष्ट्रगान और तिरंगा फहराने पर अख्तर के खिलफ फतवा भी जारी किया गया है। घटना के बाद सवाल उठना लाजमी है कि देश में रहकर राष्ट्रगान का अपमान क्यों, राष्ट्रगान गाने और तिरंगा फहराने से परहेज क्यों है। न्यायालय ने भी कुछ समय पूर्व उत्तर प्रदेश सरकार को मदरसों में राष्ट्रगान और तिरंगा फहराना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए थे।

मौलवियों ने अख्तर के खिलाफ जारी फतवा में राष्ट्रगान 'जन गण मन' को अपवित्र और हिंदुवादी गीत बताया है। इससे धार्मिक भावनाएं आहत होने की बात भी कही गई है। अख्तर तालपुकुर आला मदरसे के हेडमास्टर हैं। अख्तर के मुताबिक उन्हें पूरी तरह से इस्लामिक ड्रेस में मदरसा आने को कहा गया है। उनके क्लीन शेव और जींस पहनने पर भी पाबंदी है। उन्हें दाढ़ी बढ़ाने और हर हफ्ते फोटो खींचकर भेजने को भी कहा गया है। फिलहाल वे वेस्टर्न ड्रेस में मदरसा जाते हैं। मारपीट के बाद अख्तर मदरसा नहीं गए हैं। उन्होंने सीएम ममता बनर्जी से सुरक्षा की गुहार लगाई है। जमीयत उलेमा के वाइस प्रेसिडेंट मुफ्ती सैयद मिर्जाउद्दीन अबरार ने अख्तर से मारपीट को गलत बताया है। ईदगाह के इमाम खालिद रशीद ने कहा कि राष्ट्रगान गाना हर भारतीय का कर्तव्य है।

**अख्तर से पहले भी हो चुकी है मारपीट-** अख्तर पर हमले का यह पहला मामला नहीं है। 26 मार्च, 2015 को भी लोगों ने उनकी पिटाई की थी, तब मामला एक धार्मिक प्रतीक से जुड़ा था। कोलकाता पुलिस कमिश्नर ने मामले में अल्पसंख्यक आयोग के चेयरमैन को पत्र लिखा है। पुलिस मामले को जल्द सुलझाने की बात कह रही है।

**मालदा में पुलिस थाने पर हमला, भीड़ ने 25 गाड़ीयों को आग के हवाले किया**

मालदा, पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में समुदाय विशेष की रैली ने अचानक हिंसक रूप ले लिया। रैली में काफी संख्या में समुदाय के लोग शामिल थे। हिंसक भीड़ के सामने जो आया, उसका शिकार बना। यहां तक कि पुलिस स्टेशन भी हमले का शिकार हुआ तथा पुलिस स्टेशन में तैनात पुलिस कर्मियों को जान बचाने के लिए वहां से भागना पड़ा। सरकारी बस, जिप्सी सहित 25 वाहनों को आग के सुपुर्द कर दिया। पुलिस ने तनाव के बाद क्षेत्र में धारा 144 लगा दी है। दूसरा स्थानीय लोग सारे मामले को सुनियोजित रूप से अंजाम देने की बात भी कह रहे हैं। घटना ने कई सवाल भी खड़े किये हैं। सरकार के रवैये तथा असहिष्णुता, दादरी घटना सहित अन्य घटनाओं पर चर्चाएं, बहस करने वाला मीडिया भी सूचना देकर काम पूरा नहीं कर रहा है।

दरअसल दिसंबर माह के पहले सप्ताह में उत्तर प्रदेश में हिन्दू महासभा के नेता ने आपत्तिजनक टिप्पणी की थी जिसे लेकर विभिन्न स्थानों पर विरोध प्रदर्शन हुए थे, जिसके बाद पुलिस ने नेता के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। घटना के एक माह बाद विरोध रैली निकाली जा रही थी। घटना रविवार की है और इसमें हजारों लोग शामिल थे।

कमलेश तिवारी के विरोध में विरोध रैली रखी गई थी। जिसमें काफी संख्या में एक समुदाय के लोग शामिल थे। सभी कमलेश को फांसी दिए जाने की मांग कर रहे थे। रैली के दौरान विरोध करते हुए प्रदर्शनकारी राष्ट्रीय राजमार्ग पर उतर आए। इस दौरान राजमार्ग से जा रही बस के यात्रियों से रैली में शामिल लोगों से पहले बहस हुई, उसके बाद भीड़ ने बस पर हमला कर दिया, यात्री किसी तरह बचकर भाग गए। कुछ देर बाद मालदा से आ रही बीएसएफ की गाड़ी में भी आग लगा दी। उसके बाद भीड़ पुलिस थाने कालियाचक की ओर बढ़ी, थाने में तोड़-फोड़ की गई तथा आग लगा दी गई, पुलिस कर्मी जान बचाने के लिए वहां से भाग गए। क्षेत्र के

कुछ घरों में लूटपाट की गई, और आग लगाई गई।

पुलिस ने घटना के एक दिन बाद दो शिकायतें दर्ज की हैं। एक सरकारी संपत्ति को नष्ट करने तथा दूसरा पुलिस कर्मियों को जान से मारने का प्रयास करने मामले में। बीएसएफ की ओर से सीमावर्ती क्षेत्रों में चौकसी बढ़ाई गई है जिससे स्थिति और न बिगड़े। जिला भाजपा अध्यक्ष सुब्रत कुंडू ने बताया कि एक प्रतिनिधि दल ने घटना की जानकारी के लिए क्षेत्र का दौरा किया।

वहीं क्षेत्र में तनाव बरकरार है, पुलिस ने भाजपा के विधायक और उनके दस समर्थकों को गिरफ्तार किया है। ये सभी कालियाचक की ओर जा रहे थे। पुलिस ने मामले में अभी तक 10 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस तथा सुरक्षा बलों ने संयुक्त ऑपरेशन में जाली नोट भी बरामद किये हैं, जो स्थानीय लोगों की मदद से सीमा पार से आए हैं, ये देश के अन्य हिस्सों में पहुंच पाते उससे पहले ही सुरक्षा बलों ने जब्त कर लिया है। संयुक्त टीम ने कुछ संदिग्धों की सूची भी बनाई है, जिन पर नजर रखी जा रही है। ❖

# दीप संकल्प सत्र के साथ अभिनवगुप्त सहस्राब्दी समारोह का शुभारंभ

जम्मू कश्मीर स्टडी सेंटर की ओर से महान दार्शनिक अभिनवगुप्त के हजार वर्ष पूर्व 4 जनवरी 1016 को शिवमय होने के उपलक्ष्य में जोधपुर में विवेक शक्ति स्थल पर दीप प्रज्ज्वलन के साथ संकल्प सत्र आयोजित किया गया। शिवत्व प्राप्ति के एक हजार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में पूरे साल आचार्य अभिनवगुप्त सहस्राब्दी समारोह मनाया जाएगां वर्ष 2016 को अभिनव वर्ष के रूप में मनाने के क्रम में यह पहला आयोजन था।

कार्यक्रम का शुभारम्भ अनंत पीठाधीश पंडित विजयदत्त पुरोहित ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ दीप प्रज्ज्वलित कर किया। आयोजन समिति के मुखिया वरिष्ठ न्यूरोसर्जन डॉ. नागेन्द्र शर्मा ने आगामी कार्यक्रमों में युवाओं और बच्चों की सक्रिय भागीदारी पर बल देते हुए सांस्कृतिक संक्रमण के काल में अभिनवगुप्त के सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना पर बल दिया। युवा शिक्षाविद् निर्मल गहलोत ने शिक्षण संस्थानों के कार्यक्रमों से जुड़ाव को महत्वपूर्ण बताया। रंगकर्मी कमलेश तिवारी ने बताया कि शीघ्र ही अभिनवगुप्त के जीवन से जुड़े नाटकों का मंचन देश के विभिन्न स्थानों पर किया जाएगा। जम्मू कश्मीर स्टडी सेंटर की ओर से अयोध्या प्रसाद गौड़ ने आगामी महीनों में होने वाले आयोजनों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

दीप प्रज्ज्वलन के साथ आयोजित कार्यक्रम में आरजे रैक्स, रंगकर्मी मजाहिर सुल्तान जई, अधिवक्ता महेंद्र त्रिवेदी, सुधांशु टॉक, प्रीति गोयल, मुकेश मांडण, श्यामा प्रसाद गौड़, गोल्डी बिस्सा, यशवंत, निर्मला राव सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। दीप संकल्प सत्र के तत्पश्चात् उपस्थित सदस्यों ने अभिनवगुप्त की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने और उसके संरक्षण के प्रयास का संकल्प लिया।

ज्ञात रहे कि आधुनिक भौतिक शास्त्र के ध्वनि सिद्धांतों के प्रतिपादन से शताब्दियों पूर्व अभिनवगुप्त ने 'ध्वनि' को चौथा आयाम मानते हुए ध्वन्यालोक ग्रन्थ की रचना की थी। महाभारत की अनूठी व्याख्या करते हुए कौरव-पांडव युद्ध को अविद्या-विद्या संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया था। अभिनवगुप्त ने अपने शिष्यों के साथ शिवस्तुति करते हुए श्रीनगर के पास बड़गांव जिले के बीरवा गांव की गुफा में प्रवेश किया, जहां उन्हें 4 जनवरी 1016 को शिवत्व की प्राप्ति हुई।

अभिनवगुप्त ने कश्मीर की प्राचीन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को नए और समन्वयकारी रूप में प्रस्तुत किया। कश्मीर के दिग्विजयी राजा ललितादित्य के अनुरोध पर अभिनवगुप्त के पूर्वज अत्रिगुप्त श्रीनगर पहुंचे थे। दुनिया के जाने-माने विश्वविद्यालयों में उनके ग्रंथों पर व्यापक शोध जारी हैं और अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच, जर्मन और स्पेनिश भाषा में उनके बारे में कई ग्रन्थ लिखे गए हैं।

अभिनवगुप्त तंत्र शास्त्र, साहित्य और दर्शन के प्रौढ़ आचार्य थे और इन तीनों विषयों पर 50 से ऊपर मौलिक ग्रंथों, टीकाओं तथा स्तोत्रों का निर्माण किया है। अभिरुचि के आधार पर इनका सुदीर्घ जीवन तीन काल विभागों में विभक्त किया जा सकता है। जीवन के आरंभ में अभिनवगुप्त ने तंत्र शास्त्रों का गहन अनुशीलन किया तथा उपलब्ध प्राचीन तंत्र ग्रंथों पर अद्वैतपरक व्याख्याएं लिखकर लोगों में व्याप्त भ्रांत सिद्धांतों का सफल निराकरण किया। क्रम, त्रिक तथा कुल तंत्रों का अभिनव ने क्रमशः अध्ययन कर द्विषयक ग्रंथों का निर्माण इसी क्रम से संपन्न किया। ❖

# फौजी पिता का बहादुर बेटा

– पवित्रा अग्रवाल

आजाद अपने कुछ साथियों के साथ स्कूल से लौट रहा था। उसे घर जाने की जल्दी थी क्यों कि उसकी माँ बीमार थी। वह सुबह स्कूल नहीं आना चाहता था पर माँ ने उसे जबरन भेज दिया। 'बेटा अपनी पढ़ाई में ढील मत दो मैं ठीक हूँ फिर भी तू मोबाइल ले जा, कोई परेशानी हुई तो तुझे फोन कर दूँगी' पर ... माँ स्कूल में तो मोबाइल ले जाने की इजाजत नहीं है .... यदि किसी ने देख लिया तो ड़ांट तो पड़ेगी ही, जुर्माना भी देना पड़ेगा ....फिर भी मैं ले जाता हूँ, साइलेंट मोड में वाइब्रेशन के साथ रख लेता हूँ। जरूरी हो तो आप कर लेना वर्ना मैं खाने की छुट्टी में आप से बात कर लूँगा।

"हाँ बेटा, यह ठीक रहेगा। आजाद ने दोपहर में माँ से बात कर ली थी। सायंकाल स्कूल से लौटते समय उसे माँ के लिए कुछ फल ले जाने थे। वह फलों की तलाश में इधर-उधर नजर घुमा रहा था तभी उसकी नजर भीड़ भरे इलाके में स्थित एक कचरा कुंडी पर पड़ी। एक आदमी उस में कुछ डाल कर गया था, पर उसके हाव-भाव देख कर आजाद को लगा कि कुछ दाल में काला है। उसने अपने आसपास चलते हुए कुछ बच्चों का ध्यान उधर खींचना चाहा पर वह कान में ईयरफोन लगाए गाने सुनने में व्यस्त थे।

उसे लगा कि समय अच्छा नहीं है। लोगों को आँख कान खुले रख कर चौकन्ना रहने की जरूरत है .... एक लड़के के कान से ईयरफोन निकाल कर उसने कहा – '' अभी मैं ने एक आदमी को उस कचरा कुंडी में कुछ डाल कर जाते देखा है ... मुझे शक है कि वह बम भी हो सकता है।''

बच्चे ने बड़ी लापरवाही और बेरुखी से उसे घूर कर देखा और कहा – '' कचरे के डिब्बे में कोई कचरा ही डालेगा न '' और अपने कान पर दुबारा ईयरफोन लगाते हुए उस से आगे निकल गया।

तभी आजाद को वह आदमी अपनी तरफ आते हुए दिखा। एक पेड़ की आड़ में खड़े हो कर आजाद ने मोबाइल से उसका फोटो भी लेने का प्रयास किया। अब आजाद दुविधा में था कि क्या करूँ?पुलिस को बताया जाए या नहीं। यदि वहाँ कुछ नहीं मिला तो वे समझेंगे कि मैं ने उन्हें बिना बात गुमराह कर के उनका समय बर्बाद किया है। कुछ पुलिस वाले तो गलत सूचना पर उसे दंड भी दे सकते हैं।

आखिर उसने अपनी दुविधा पर विजय पा ली। 100 नं. पर फोन मिला कर उसने अपना नाम, अपने स्कूल का नाम व जगह बता कर अपना शक जाहिर करते हुए कहा कि मैं नहीं जानता कि मेरा शक सही है या गलत। हो सकता है वहाँ कुछ भी न मिले .... आप चाहें तो जगह की जाँच कर सकते हैं?

"ठीक है बेटा, जब तुमने अपनी पूरी पहचान बता कर फोन किया है तो हम तुम्हें झूठी अफवाह फैलाने वाला तो नहीं मान सकते .... हम वहाँ जा कर देखेंगे।

"सर अब मै अपने घर जा रहा हूँ ... मेरी माँ बीमार है। मेरा मोबाइल नंबर आपके पास रिकार्ड हो गया होगा। मेरी किसी मदद की जरूरत हो तो आप मुझे फोन कर सकते हैं।

"ठीक है बेटा।

एक घन्टे बाद पुलिस का फोन आया --- '' आजाद तुम्हारा शक सही निकला। वहाँ एक जीवित बम पाया गया है। वह यदि फट जाता तो बहुत सी जाने जा सकती थीं। हम तुम से मिलना चाहते हैं ... तुम से उसका हुलिया जान कर हमारे एक्सपर्ट गुनहगार का चित्र बनाएँगे ताकि उसे पकड़ा जा सके।

"सर मैं ने मोबाइल से उसका फोटो लिया था, हो सकता है आप को उस से कुछ मदद मिल सके।

"ओ अच्छा, यह तुमने बहुत अच्छा किया, तुम मोबाइल के साथ आ जाओ।

आजाद ने अपनी माँ को विस्तार से पूरी घटना बताई। यह सुन कर माँ बहुत खुश हुई और बोलीं--

"शाबाश बेटा, मुझे तुम पर नाज है। फौजी पिता के बहादुर बेटे हो तुम .... सुन कर पिताजी बहुत खुश होंगे।

थोड़ी देर बाद माँ ने टी. वी. चालू किया तो समाचार आ रहा था --- '' एक बच्चे की मदद से एक बहुत बड़ा हादसा होते होते बचा। उसने पुलिस को बम रखे होने का शक जाहिर किया था जो सही निकला। उस साहसी बच्चे से अभी मीडिया का संपर्क नहीं हो पाया है .. ... अभी अभी खबर आई है कि दो जगह और भी बम विस्फोट हुए हैं। ताजा जानकारी के साथ हम फिर हाजिर होंगे। **साभार: इन्टरनेट**

## प्रश्नोत्तरी

1. हिमाचल प्रदेश की किस महिला खिलाड़ी को तलवारबाजी का रजत पदक प्राप्त हुआ।
2. अपने प्रदेश में सम्पन्न पंचायत चुनावों में निर्विरोध चुने गये प्रत्याशियों की संख्या कितनी है।
3. अपने प्रदेश में सम्पन्न पंचायत चुनावों में चुने गये प्रदेश के अब तक के सबसे युवा प्रधान किस जगह से है?
4. किस प्रसिद्ध हिमाचली कवि का अभी हाल ही में निधन हो गया।
5. हाल ही में किस खिलाड़ी ने सामान्य श्रेणी क्रिकेट के एक मैच में अभी तक के सर्वाधिक रन बनाए हैं।
6. भारत रत्न किस महान वैज्ञानिक को देने की घोषणा की गयी है।
7. स्वदेश निर्मित पहला युद्धपोत कौन सा है।
8. अभी हाल ही में हाइड्रोजन बम का सफल परीक्षण करने वाला देश कौन सा है।
9. बालश्रम प्रतिबंध एवं विनियमन अधिनियम, 1988 के अनुसार किस आयु वर्ग नीचे के बच्चों को रोजगार में लगाया जाना निषिद्ध है।
10. मेण्डीलीफ आर्वत सारणी में हाल ही में कितने नए तत्वों को जोड़ा गया है।

## चुटकुले

शहरी– इतनी देर से लैटर बॉक्स के सामने क्यों खड़े हो?

ग्रामीण– जवाबी कार्ड डाला था उसके उत्तर की प्रतीक्षा में हूँ।

पिता– तुम्हारे मास्टर साहब कह रहे थे कि तुम काफी तेज लगते हो, हमेंशा सबसे आगे रहते हो। फिर फेल कैसे हो गये?

शाबू– वह तो मेरे दौड़ने के बारे में कह रहे थे।

अध्यापक ने छात्रों से कहा जो छात्र स्वर्ग जाने की इच्छा रखता हो, वह हाथ ऊपर उठाए।

सभी छात्रों ने हाथ उठा दिए मगर सुरेश ने हाथ ऊपर नहीं उठाए।

अध्यापक– क्या तुम स्वर्ग में नहीं जाना चाहते?

शाबू– नहीं मास्टर जी!

अध्यापक– क्यों?

शाबू– क्योंकि मेरी माँ ने कहा था कि स्कूल से सीधे घर आना नहीं तो हाथ–पैर तोड़ दूँगी।

## पहेलियाँ

1. पानी में खुश रहता हरदम,
   धीमी जिसकी चाल,
   खतरा पाकर सिमट जाए झट,
   बन जाता खुद ढाल...
2. सरस्वती की सफेद सवारी,
   मोती जिनको भाते,,
   करते अलग दूध से पानी,
   बोलो कौन कहाते...
3. कान बड़े हैं, काया छोटी,
   कोमल–कोमल बाल,
   चौकस इतना पकड़ सके न,
   बड़ी तेज है चाल...
4. नर पंछी नारी से सुन्दर,
   वर्षा में नाच दिखाता,
   मनमोहक कृष्ण को प्यारा,
   राष्ट्र पक्षी कहलाता...
5. हरी ड्रेस और लाल चोंच है,
   रटना जिसका काम,
   कुतर–कुतरकर फल खाता है,
   लेता हरि का नाम...
6. छोटे तन में गांठ लगी है,
   करे जो दिन भर काम,
   आपस में जो हिलमिल रहती,
   नहीं करती आराम...
7. छत से लटकी मिल जाती है,
   छह पग वाली नार,
   बुने लार से मलमल जैसे,
   कपड़े जालीदार..

**पहेली के उत्तर –**

१. कछुआ, 2. हंस, 3. खरगोश, 4. मोर, 5. तोता, 6. चीटी, 7. मकड़ी।

# मातृवन्दना

सदस्यता अभियान 2016-17

1-20 फरवरी 2016




बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

| | |
|---|---|
| हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका | सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच |
| 35 हज़ार परिवारों तक पहुंच | दो लाख से अधिक पाठक |
| नववर्ष का आकर्षक क्लैंडर नि:शुल्क | समाचार ही नहीं संस्कार भी |

**पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार**

*अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :*

**प्रबन्धक, मातृवन्दना**

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष : 0177-2836990

*email: matrivandanashimla@gmail.com*

*website: www.matrivandana.org*

**वार्षिक शुल्क**

**100 रुपए**

आजीवन सदस्य ( 15 वर्ष )

1000/- रुपए

नियमित पाठकों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण उपर्युक्त समय पर अवश्य करवाएं।

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

## MIT GROUP OF INSTITUTIONS BANI TEHSIL BARSAR DISTT. HAMIRPUR

H.P.-174304 (on UNA Express Highway)

B.tech, Polytechnic & International School

| B.tech Courses | Polytechnic Courses | MIT International School |
|---|---|---|
| Mechnical Engg | Mechnical Engg | Nursery – 10th |
| Civil Engg | Civil Engg | |
| Electrical Engg | Electrical Engg | |
| Electronics and communication engg | Electronics and communication engg | |
| Computer Engg | Computer Engg | |
| Electrical and electronics Engg | Automobile Engg | |
| | Hotel Management | |

**Facilities:-**

Transport Facility Available Separate boys and Girls Hostel Wifi Campus

Experienced and well qualified Faculty Best placements and Merits Record

Special Scholarships and discounts for low income students

Gym and Indoor/ Outdoor games facilities Restaurants and Cafes.

E-mail: mit_poly@yahoo.com
mit_engg@yahoo.com

website: www.mithmr.com

Admission Help line: 9805034000, 9805516018, 9805516003, 9805516030, 9805516001

HP/48/SML (upto 31-12-2017) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

HIM AGRO FOOD CORPORATION
Global Solution Provider For Agro Food Industry

# BRINGING TOGETHER THE MAKER & THE TAKER

New age Technology that connects the Farmer and the Consumer; serving India from the farm to the fork.

CONTROLLED ATMOSPHERE STORES

TECHNOLOGY SOLUTIONS FROM FARM TO FORK

CONTRACT FARMING

FARM SUPPORT SERVICES

FOOD PROCESSING

ORGANIC FARMING

MEGA FOOD PARK

Season's Greetings

HIM AGRO FOOD CORPORATION, SCO 118-119-120, 4th FLOOR, SECTOR 34-A, CHANDIGARH-160022, PHONE: +91 172 4989999, www.hafcoindia.com

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276